4:1-11

# दुःख भोगने वाले परमेश्वर के लोगों के जैसा व्यवहार करना

## (भाग 3)

### शरीर के विरूद्ध हथियार बांधना (4:1-3)

**[1]इसलिये जब कि मसीह ने शरीर में होकर दुःख उठाया तो तुम भी उसी मनसा को हथियार के समान धारण करो, क्योंकि जिसने शरीर में दुःख उठाया वह पाप से छूट गया, [2]ताकि भविष्य में अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं वरन् परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करे। [3]क्योंकि अन्यजातियों की इच्छा के अनुसार काम करने, और लुचपन की बुरी अभिलाषाओं, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, पियक्कड़पन, और घृणित मूर्तिपूजा में जहाँ तक हम ने पहले समय गँवाया, वही बहुत हुआ।**

3:13-18, में प्रेरित ने अपने पाठकों के दुःखों को संबोधित किया है। उसने उनसे आग्रह किया कि वे अपने दुःखों को मसीह के दुःखों के पृष्ठभूमि में देखें। प्रभु के दुःखों ने पतरस को, जब यीशु ने नूह के दिनों के लोगों को प्रचार किया था, स्मरण दिया। ये वे लोग थे जो पतरस के समकालीन लोगों के जैसे प्रभु के न्याय का सामना कर रहे थे। 3:19-22 के टिप्पणी के पश्चात्, प्रेरित, मसीह के दुःखों पर ध्यान केन्द्रित करता है। पतरस चाहता था कि उसके पाठक यह जाने कि उनके जीवन में जो उथल-पुथल आए हैं उससे प्रभु के दुःख उठाने का बहुत कुछ संबंध है।

**आयत 1.** 3:18 में, पतरस ने कहा कि यीशु "पापों के लिए मरा।" अब उसने कहा, **मसीह ने शरीर में होकर दुःख उठाया।** संभवतः दुःख उठाया वक्तव्य से पतरस का तात्पर्य मसीह के संपूर्ण देह धारण से था। उसका दुःख, उसके परिपक्वता की ओर बढ़ना, उसके अपने लोगों के द्वारा उसका इनकार, उसका लोगों के साथ घंटों समय व्यतीत करना, उनको शिक्षा देना और चंगा करना निहित है। मसीहियों के दुःख उठाने के परिदृश्य में, पतरस संभवतः उनके लिए मसीह के जन्म से उसके मृत्यु तक, उनके लिए उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए मसीह के दुःखों की ओर संकेत कर रहा होगा। सभी परिस्थितियों में उन्हें "उसके

पद-चिह्नों पर चलने" के लिए उत्साहित किया गया है (2:21)। जब वे दुःख उठाते हैं तो उन्हें प्रभु की ओर दृष्टि करना है और उसके उदाहरण से प्रेरित होकर ढाढ़स बांधना है। पतरस के शब्दों को समझने के लिए यह एक संभावित माध्यम है लेकिन इसके अलावा और भी तरीके हैं जिसके द्वारा पतरस के शब्दों को समझा जा सकता है।

दूसरी संभावना यह है कि पतरस अपने पाठकों का ध्यान क्रूस पर मसीह की मृत्यु की ओर आकर्षित करना चाहता था। इस मामले में दूसरे तरीके से यह कहा जा सकता है कि मसीह का "शरीर में" दुःखों का संदर्भ उसका "पापों के लिए घात" किए जाने से है (3:18)। यदि पतरस का कहने का तात्पर्य यही था तो मसीह ने यह उदाहरण अपने शरीर में सेवकाई के दौरान उनके लिए प्रस्तुत नहीं किया था। बल्कि, प्रेरित यह चाहता था कि उसके पाठक मसीह के छुटकारे के कार्य को अपने पुराने पापों के जीवन से छूटने के लिए प्रेरणा स्वरूप देखें। संभवतः यीशु का शरीर में रहते हुए दुःख उठाना और क्रूस पर उसका कठिन परीक्षा किया जाना, के मध्य विभेद करना आवश्यक था। यदि हमें इन दोनों के मध्य चुनाव करना हो तो पतरस के मन में मसीह के छुटकारे का कार्य रहा होगा। क्रूस पर मसीह का दुःख उठाना उसकी पराकाष्ठा पर पहुँचा, साकार हुआ और उसकी भरपूरी तक पहुँचा। मसीह के छुटकारे का कार्य प्रेरित के विचारों का केन्द्र बिंदु था (2:24; 3:18)।

अपने अस्त्र-शस्त्र बांध लो, यूनानी क्रिया ὁπλίζω *(होपलिद्जो)* का अनुवाद है। इस शब्द का शाब्दिक शब्द अर्थ "अपने आपको तैयार करो" या "तैयार हो जाओ" है, लेकिन यहाँ यह सेना के प्रयोग संकेतार्थ है। सेना के संदर्भ में इसका अर्थ "अपने आपको को युद्ध के लिए तैयार करना" है। नए नियम में इसका क्रिया रूप केवल यहीं प्रयोग किया गया है, जबकि संज्ञा रूप ὅπλον *(हॉलॉन)* को पौलुस ने आत्मिक मलयुद्ध के हथियार के रूप में प्रयोग किया है (रोमियों 13:12; 2 कुरिंथियों 6:7; 10:4)।

पतरस के लिए, मसीही जीवन दुष्ट के साथ एक सामान्य झगड़ा से बढ़कर था। इसमें संपूर्ण युद्ध निहित है। जबकि पौलुस ने इफिसियों 6:11 में इसके लिए दूसरा शब्द प्रयोग किया है, लेकिन इनका आशय एक ही है: "परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको" (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:8)। पतरस ने कहा कि एक मसीही को अपने मस्तिष्क (ἔννοια, *एन्नॉया)* और समझ को आत्मिक स्रोत जो मसीह में मिलता है, से परमेश्वर के बाँध लेना चाहिए। NASB में इस शब्द का अनुवाद उसी उद्देश्य के लिए किया गया है जिसका NIV में "वही दृष्टिकोण" ("same attitude") और NRSV में "वही प्रयोजन" ("same intention") अनुवाद किया गया है। जैसे मसीह ने विश्वासियों सामने उदाहरण रख छोड़ा है वैसे ही उन्हें दुःखों के प्रति अपने मस्तिष्क को उसी स्वभाव से बाँधना चाहिए। जो हथियार यीशु देता है वह उन्हें घोर दुःखों से, जिसका वे समाना करते हैं, पार करने में सहायता करेगा।

यह विश्लेषण करने के लिए कि मसीही को उसी प्रकार के विचारों से अपने आपको हथियार बंद करना है जिसका उदाहरण मसीह ने प्रस्तुत किया है तो इसके लिए पतरस ने एक वाक्यांश लिखा जिसका अंतहीन विवाद अभी भी जारी है: **क्योंकि जिसने शरीर में दुःख उठाया वह पाप से छूट गया।** NASB में इसका शाब्दिक अनुवाद पाया जाता है, लेकिन इस अनुवाद से कई कठिन प्रश्न उठ खड़े होते हैं। क्या पतरस यह कहना चाहता था कि मसीही होने का तात्पर्य दुःख उठाना आवश्यक था? क्या वह यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि मसीही लोग इस प्रवृति के अनुसार, अब पाप नहीं करते हैं? क्या प्रेरित ने यह कहा कि शरीर में दुःख उठाने से पाप छूट जाता है? अधिकांश मसीही निर्भीकता पूर्वक यह घोषणा नहीं करते हैं कि अब वे "पाप नहीं करते हैं।" परिपक्वता आने वाले जीवन के लिए है, इस जीवन के लिए नहीं। यूहन्ना ने लिखा, "यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं" (1 यूहन्ना 1:8)। ये उदाहरण यह दर्शाता है कि प्रेरित का यहाँ इस वक्तव्य को कहने का तात्पर्य यह कतई नहीं था कि सभी मसीही या फिर वे जिन्होंने "शरीर में दुःख उठाया है," जब से उन्होंने मसीह को ग्रहण किया है, कभी पाप नहीं करते हैं। स्पष्टता की दृष्टिकोण से NIV में इस वाक्यांश का शाब्दिक अनुवाद नहीं किया गया है। यह इस वाक्यांश का भाव इस प्रकार अनुवाद करके समझाने का प्रयास करता है, "क्योंकि जिसने शरीर के भाव से दुःख उठाया वह पापों से छूट गया।" NRSV इस प्रकार अनुवाद करता है, "जिसने शरीर में दुःख उठाया वह पापों से छूट गया।"

वेन ए. ग्रूडेम ने "पाप से छूट गया" का इस प्रकार व्याख्या किया है: "जिसने भी भले कार्य करने के लिए दुःख उठाया और उसके बाद भी उसने परमेश्वर की आज्ञा मानी, उसने निश्चय ही पाप से मुँह मोड़ लिया है।"[1] पश्चाताप करना एक बार से अधिक कार्य है। यह विचार रोमियों 6:3-7 से मिलता जुलता है। जब कोई मसीही होने के कारण दुःख उठाता है तो पहले के समान पाप उस पर अधिकार नहीं जताता है। दुःख में शुद्धिकरण का भाव है (1:7) जो यह सामान्य विश्वास से मेल नहीं खाता है। यद्यपि मसीही लोग पूर्णतया पाप से छूट नहीं जाते हैं, परंतु जब वे अपने विश्वास का मोल चुकाते हैं तो पाप की पकड़ ढीली हो जाती है। जो लोग मसीह के नाम के कारण दुःख उठाते हैं वे दोबारा कभी भी परमेश्वर की आज्ञा के उल्लंघन के पाप को हल्के में नहीं ले सकते। मसीह का दुःख, मसीहियों का बपतिस्मा और पवित्र जीवन जीना ही पतरस के विचारों में था।

**आयत 2.** मसीह के लिए जीना जीवन भर का समर्पण है। जो परमेश्वर के बारे में कुछ भी नहीं जानता है, जिसने शारीरिक अभिलाषा की पूर्ति की है, सुसमाचार सुनकर उसको मानता है तो वह नए जीवन को गले लगाता है। मसीही का जीवन दो विशिष्ट समय काल में पाया जाता है: (1) बपतिस्मा पूर्व जीवन और (2) नया जन्म पाने के बाद का जीवन (देखें इफिसियों 4:22-24; तीतुस 3:3-5)। मसीह को अपना जीवन समर्पण करने के बाद विश्वासी "पाप

करने से छूट जाता है।" **उसने अपने आपको भविष्य में अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं वरन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करने के लिए** समर्पण किया है। भूतकाल नहीं बदला जा सकता है। इसलिए इस पर अधिक समय बिताना व्यर्थ है। फिर भी, मसीही लोग अपने पुराने जीवन पर, यद्यपि वह पीछे छूट गया है, लज्जा पूर्ण दृष्टि डालते हैं। पृथ्वी पर चाहे उसका शेष जीवन कुछ मिनट या दिनों का क्यों न हो वह शरीर में जीने के लिए पर्याप्त है। पाप जीवन को नीचा और अमानवीय बनाता है।

पतरस को अपने संगी विश्वासियों का उनके विश्वास के कारण दुःख उठाने की चिंता थी परंतु उसको इस बात की खुशी थी कि वे अब शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं वरन् परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करते हैं। दुःख किसी के व्यवहार का परिणाम हो सकता है। यह उन लोगों के साथ नहीं होना चाहिए जो यीशु नासरी को जानते हैं। प्रेरित ने मसीहियों से आग्रह किया कि वे अपने अन्य जातीय पड़ोसियों के सामने एक नेक उदाहरण छोड़ें। यदि दुःख आए तो यह मसीहियों का नम्रता और भलाई के प्रति समर्पण के कारण ही आए। यह विषय इस पत्री में उल्लेखित है। सरकार और न्यायालय अन्यायी हो सकते हैं लेकिन पतरस ने विश्वासियों को निर्देशित किया कि "सब का आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो" (2:17)। दासों को अपमानित किया जाता था परंतु पतरस ने लिखा, "क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूँसे खाए और धीरज धरा, तो इस में क्या बड़ाई की बात है?" (2:20)। अविश्वासी, अन्याय करके मसीहियों पर हर संभव दोष लगाते हैं, इसके बावजूद प्रेरित ने वाद विवाद किया, "क्योंकि यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो कि तुम भलाई करने के कारण दुःख उठाओ, तो यह बुराई करने के कारण दुःख उठाने से उत्तम है" (3:17)। बाद में पतरस कहेगा, "तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुःख न पाए" (4:15)।

यूनानी शब्द σάρξ *(सारक्स)* का अनुवाद "मनुष्यों की बुरी लालसा" करता है। अन्य स्थानों पर यह इसका अनुवाद "पापमय प्रवृति" करता है। दुर्भाग्य पूर्ण अंग्रेजी अनुवादक अंग्रेजी पाठकों की उपमा अलंकार समझने की क्षमता को बहुत कम आंकते हैं। स्पष्टतया, पौलुस और पतरस दोनों ने ही, *सारक्स* का प्रयोग मांस/शारीरिक, पापमय अभिलाषा के लिए किया है। यदि हम इस उपमा अलंकार का यही अर्थ लें, तो अंग्रेजी पाठक "शारीरिक" को उसी संदर्भ में समझेंगे जिस संदर्भ में यूनानी पाठकों ने इसे समझा था। "शरीर" का अर्थ काम वासना के संदर्भ में समझने के लिए धर्म वैज्ञानिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। पतरस चाहता था कि उसके पाठक अपने पुराने जीवन, शारीरिक अभिलाषा, से मुँह मोड़कर अपने बचे हुए जीवन में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने पर ध्यान लगाएं।

**आयत 3.** चाहे यहूदी हो या फिर मसीही, जिसने भी इस्राएल के परमेश्वर की आराधना की, उनके लिए यूनानी-रोमी नैतिकता अधिक मायने नहीं रखती थी। इसके लिए उनके पास तर्क संगत कारण भी था। स्पष्ट रूप से पतरस के

पाठक बड़ी संख्या में गैर यहूदी पृष्ठभूमि से आए थे। मसीही बनने से पहले, वे यूनानी-रोमी संस्कृति के उपासक थे। उन्होंने उसकी यौन नैतिकता और सार्वजनिक त्यौहारों को गले लगाया था। जब वे मसीही बने तब भी उनका पुराना जीवन/संसार उनका सामना करता रहा। मित्र और परिवार के सदस्य उन्हें वैसे ही जीवन जीते हुए देखना चाहते थे जैसे वे अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। संभवतः उनसे कुछ को तो अपने पुराने जीवन की आदतों को छोड़ने में कठिनाई हो रही थी। पतरस के इन शब्दों ने उनके लिए सीमा बना दी जब उसने कहा कि अन्य जातियों के समान अभिलाषाओं में जीवन बिताने का समय बीत चुका है। बहुत हो चुका! जैसे माँ-बाप बच्चे को डांटते हों, "यह तुम बहुत देर से कर रहे हो," अर्थात अब बहुत हो गया है। हमें इस आशय के साथ पतरस के शब्दों को समझना चाहिए। जब उसने यह कहा कि "पहले बहुत समय गँवाया," तो इससे उसका तात्पर्य यह था कि आवश्यकता से अधिक समय बीत चुका है। किसी भी मसीही के लिए "अन्य जातियों के अभिलाषा के अनुसार" जीवन बिताने का कारण नहीं है।

"यहूदी" के लिए कोई भी अन्य जाति, गैर यहूदी हो सकता है। जब यीशु ने अपने शिष्यों को "सीमित आदेश" देकर भेजा, तो उसने उनसे कहा, "अन्य जातियों की ओर न जाना" (मत्ती 10:5)। स्पष्ट था कि उन्हें गैर यहूदियों को शिक्षा नहीं देना था। परंतु, कलीसिया अपने आपको सच्चे इस्राएल के रूप में देखती है। क्योंकि इस्राएल अब कलीसिया है, तो मसीही समुदाय में "अन्यजाति" का तात्पर्य गैर मसीही है। इस प्रकार, जब पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को "अन्यजातियों के जैसे काम अभिलाषा" (1 थिस्सलुनीकियों 4:5) का अनुकरण नहीं करने को कहा, तो यह ऐसा है मानो उसके यूनानी मसीही पाठकों ने अपने संगी यूनानियों को जिन्होंने मसीह को नहीं अपनाया था, अन्यजाति समझा। जब उन्होंने बपतिस्मा के द्वारा मसीह को पहन लिया था, तौभी वे जाति से यूनानी थे परंतु अन्य जाति नहीं हुए। अन्यजाति, गैर मसीही थे। जिस प्रकार पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों 4:5 में "अन्यजाति" शब्द का प्रयोग किया उसी प्रकार पतरस ने भी इस शब्द का प्रयोग किया है। इस शब्द को हम किस प्रकार अनुवाद करते हैं उसका अपना निहितार्थ है। अंग्रेजी में इसके लिए अन्यजाति ("Gentile") के बजाय मूर्तिपूजक ("pagan") शब्द प्रयोग किया गया है। इसलिए 1 पतरस 4:3 का NIV में इस शब्द का अनुवाद "मूर्तिपूजक" ("pagans") पाया जाता है।

पहला पतरस 2:1 में प्रेरित ने विश्वासियों को व्यवहारिक गुणों की सूची प्रस्तुत की है जिन्हें उन्हें व्यवहारिक जीवन में अभ्यास करना है। यहाँ उसने उन्हें एक दूसरी सूची जारी किया है। इससे पहले के अनुच्छेद में मसीही समुदाय में व्याप्त पाप, एक विषय था। 4:3 में, मूर्तिपूजकों के जीवन शैली को ध्यान में रखा गया है। पतरस ने यहाँ जो मूर्तिपूजकों के पापों की लक्षण की सूची प्रस्तुत की है वह अन्य पत्रियों में जारी पापों की सूची से मिलता जुलता है। 4:3, रोमियों 13:13 और गलातियों 5:19-21 में लिखे पापों की सूची (पियक्कड़पन और कामुकता) प्रमुख है। इसमें से हरेक शब्दों की संक्षिप्त छानबीन सहायक सिद्ध

होगी।

**लुचपन** (ἀσέλγεια, *आसेलगेइया)* का तात्पर्य आत्म संयम छोड़ना है। यह ऐसा व्यवहार है जिसे न तो परमेश्वर और न ही मनुष्य स्वीकार करते हैं। जब कोई अपने आपको पशु समान यौन इच्छा के सुपुर्द कर देता है और उसके परिणाम की परवाह नहीं करता है तो वह इस पाप का दोषी ठहरता है। **बुरी अभिलाषा** (ἐπιθυμία, *एपिथुमिया)* निष्क्रिय शब्द है। इससे अच्छे या बुरे इच्छा/कार्य का बोध होता है। पहला पतरस 4:3 में प्रयोग किए गए इस शब्द का संदर्भ ही "अभिलाषा" को न्यायसंगत बनाता है। कुछ इच्छाएं अच्छी होती हैं। NASB इस यूनानी शब्द को फिलिप्पियों 1:23 में "अभिलाषा" (जी चाहता है) अनुवाद करता है : "जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ।" पतरस ने इस शब्द का प्रयोग गैरकानूनी इच्छा के रूप में किया है, विशेषकर ऐसे कार्य जो लैंगिक प्रवृति की हों। **मतवालापन** (οἰνοφλυγία, *ओइनोफलूगिया)* पर टिप्पणी करने की आवश्यकता है। नए नियम में मात्र यही एक स्थान है जहाँ अधिक मात्रा में मादक द्रव्य सेवन करने के लिए इस यूनानी शब्द का प्रयोग किया गया है। प्राचीन और आधुनिक समाज में लीलाक्रीड़ा (अनैतिक यौन प्रवास), अपव्यय जीवन, और मादक द्रव्य का सेवन प्रचलित है।

**घृणित मूर्तिपूजक** (κῶμος, *कोमोस)* यूनानी देवी देवताओं को चढ़ाया जाने वाला भोज से संबंधित त्योहार है। डायोनिसियस की आराधना में इस प्रकार का दृश्य दिखाई देता है। एक मसीही को यह स्मरण दिलाया गया है कि जब उसके सम्मुख इस प्रकार के त्योहार का आयोजन होता है तो उसको अपनी उचित संगति चुनने की आवश्यकता है। **पियक्कड़पन** (πότος, *पोटोस)* पहले वर्णित शब्द से मिलता जुलता है लेकिन इसमें धर्म की कोई विधा नहीं है। नए नियम में इस शब्द का प्रयोग केवल यहीं पर किया गया है, लेकिन सार्वजनिक सभा में यह दावत से संबंधित है जहाँ नशीली द्रव्य भरपूरी से दी जाती है। नशीली द्रव्य और लीलाक्रीड़ा पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यहाँ कोई दुर्घटना नहीं है कि पतरस ने विश्वासियों को घृणित मूर्तिपूजा से बचे रहने के लिए पापों की यह सूची अकस्मात समाप्त किया है। पतरस के पाठकों के जीवन से मूर्तिपूजा घनिष्ठता से जुड़ा हुआ था। वे मूर्तिपूजकों में से उद्धार पाकर आए थे। यूनानी-रोमी देवी-देवताओं की उपासना, जिनका अनैतिक जीवन पर किसी भी प्रकार का रोकथाम नहीं था, अनैतिक जीवन के एक बहुत बड़े स्रोत थे। मूर्तिपूजा शर्मनाक था; यह "घृणित" था क्योंकि इसमें सृष्टि करने वाले परमेश्वर का अपमान था। इसके साथ ही, इसने अमानवीय व्यवहार को अनुमति दी और ऐसे कार्यों को उत्साहित किया। सब प्रकार की घृणित कार्य जैसे बच्चों को जोखिम में डालना, तलवार चलाने की प्रतियोगिता, और लीलाक्रीड़ा, यूनानियों के हरेक घर में पाया जाता था जिसको किसी ईश्वर की अनुमति की आवश्यकता नहीं थी।

# मूर्तिपूजकों की उत्तरदायित्व (4:4-6)

**[4]इस से वे अचम्भा करते हैं, कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उन का साथ नहीं देते, और इसलिये वे बुरा भला कहते हैं। [5]पर वे उस को जो जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने को तैयार है, लेखा देंगे। [6]क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार इसी लिये सुनाया गया, कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उन का न्याय हो, पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें।**

पतरस का विचार ईश्वर रहित जीवन, जो मूर्तिपूजकों के समाज को चरितार्थ करता है, जिसे उसके पाठकों ने पहले गले लगाया था, से हटकर मूर्तिपूजकों के हठ कि विश्वासियों को मूर्तिपूजा और अनैतिकता में भाग लेना है, पर ठहर जाता है। यह दुर्भाग्य पूर्ण बात है कि जिन्होंने अपने जीवन को नाश होने के लिए सौंपा है, जब तक कि दूसरे उनके इसमें भागीदारी को मान्यता नहीं देते हैं, बहुधा असहज अनुभव करते हैं । जब विश्वासियों ने मूर्तिपूजकों के रीति रिवाजों (अनैतिकता) में भाग लेने से इनकार किया, तो उनका व्यवहार कैन के भांति समझा गया (1 यूहन्ना 3:12), उनसे घृणा करते थे जिनका अच्छा जीवन उन्हीं पर दोषारोपण करता था।[2]

**आयत 4.** यूनानी नगरों में सामाजिक जीवन, त्यौहारों, क्रीड़ा और कई प्रकार के रीति रिवाज, जो देवी-देवताओं को समर्पित था, के इर्द-गिर्द घूमता था। सार्वजनिक त्यौहारों में सामान्य रीति रिवाज, जैसे पियक्कड़पन और लुचपन, की पतरस ने निंदा की है। मसीहियों ने इन सार्वजनिक सभाओं में भाग लेने से अपने आपको अलग कर लिया था क्योंकि जिस प्रकार का समर्पण उन्होंने किया था वह उन्हें इस प्रकार की सार्वजनिक सभा में भाग लेने की अनुमति नहीं देता (4:1)। अविश्वासियों को उनके इस प्रकार का व्यवहार अपमानजनक जान पड़ता था। इसी कारण मसीही होने की प्रक्रिया ने संभवतः उनके इच्छा को विचलित किया होगा। यदि मसीही लोग अपने धर्म के प्रति यथोचित पृथक रखते, तो जब किसी अविश्वासी के संबंधी या पड़ोसी, यीशु को ईश्वर मानकर उसकी आराधना करता तो संभवतः उन्हें अधिक आपत्ति न होती। यूनानी संस्कृति में दूसरे देवी-देवताओं के लिए भी स्थान था। फिर भी, जब वही लोग सार्वजनिक सभा में भाग लेने के निमंत्रण को ठुकरा देते थे और अपने आपको अलग कर लेते थे, मानो जैसे उनकी पुरानी परंपरा और पुराने देवी-देवता कुछ भी नहीं है, तो इससे मूर्तिपूजक अचंभा करते थे। किसी नए देवी या देवता से वे अधिक आहत नहीं होते थे, लेकिन वे मसीहियों के दावे से आहत हो जाते थे : केवल एक ही ईश्वर है। पुराने देवी-देवता कुछ भी नहीं हैं। जब उनके पड़ोसी और मित्र सार्वजनिक सभा में भाग लेने से इनकार करते थे तो वे आहत अनुभव करते थे। इससे बढ़कर वे इसे अपना अपमान समझते थे।

मसीहियत, संस्कृति प्रतिकूल था और आज भी वैसा ही है। यीशु नासरी की शिक्षा अनैतिक और लुचपन लोगों को चुनौती देता है। पतरस, यीशु की सेवा

केवल अपने मुख वाणी से ही नहीं करता है। कोई भी मसीह को ग्रहण करके अपने मूर्तिपूजक पड़ोसियों के साथ **लुचपन में जीवन नहीं व्यतीत कर सकता है** जिसमें वह पहले कभी जीवन व्यतीत किया करता था। ἀνάχυσις *(अनाखुसिस)*, शब्द का शाब्दिक अनुवाद "बाढ़" है। वे इस बात से अचंभित थे कि एक व्यक्ति लापरवाही से, जो मूर्तिपूजक समाज की खूबी है, और जिसे उन्होंने पहले ही त्याग दिया था, उनके साथ मिलकर बाढ़ के समान आगे नहीं बढ़ता है। इफिसियों 5:18, में पौलुस ने इसी शब्द का प्रयोग किया है जिसका अनुवाद इस आयत में "लुचपन" (ἀσωτία, *असोटिया)* किया गया है। पतरस के भांति, पौलुस इस शब्द का संबंध पियक्कड़पन से किया है।

पतरस का वचन मसीहियों को ऐसा जीवन जीने के लिए चुनौती देता है जो संसार द्वारा सामान्य समझा जाने वाला व्यवहारों पर अभियोग लगाये। जब लोग अपने जीवन को साधारण बनाते हैं और अपने और दूसरों के जीवन को दाखरस, मादक द्रव्य, लीला क्रीड़ा और हिंसा के द्वारा नाश करते हैं तो इससे परमेश्वर अप्रसन्न होता है। परमेश्वर के लोगों को इस प्रकार के कार्यों में भाग नहीं लेना है। जो यह समझते हैं कि संसार पर अभियोग लगाने से वे शत्रुता मोल लेते हैं, तो उन्हें यीशु के ये वचन स्मरण रखने चाहिए, "हाय, तुम पर; जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें, क्योंकि उन के बाप-दादे झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया करते थे" (लूका 6:26)।

जब विश्वासी इस प्रकार जीते हैं कि संसार उन पर अभियोग लगाये, तो वे संसार से निंदा की अपेक्षा कर सकते हैं। वाक्यांश, बुरा-भला कहते हैं, के लिए एक ही यूनानी शब्द प्रयोग किया गया है। इसको यदि अधिक शाब्दिक रूप में देखा जाये तो यह "निंदा करना" (βλασφημέω, *ब्लासफेमेयो)* समझा जा सकता है। अतः इस शब्द का अर्थ जो पवित्र है उसको अनिष्ट/गंदा करना है। जब कोई परमेश्वर के नाम की निंदा करता है तो वह निंदा करने का पाप करता है लेकिन परमेश्वर का अपने लोगों के साथ इतना घनिष्ठ संबंध है कि जब कोई उनको बुरा भला कहता है तो यह उसी की निंदा करने के बराबर है। प्रेरित 9:4 आँख खोलने वाली अनुच्छेद है। तरसुस का शाऊल मसीहियों को सता रहा था, लेकिन यीशु ने उससे दमिश्क के मार्ग में पूछा, "हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" (प्रेरित 9:4)। पतरस इस बात को स्पष्ट करने से नहीं चूका कि जब अविश्वासी परमेश्वर के लोगों के नामों की निंदा करते हैं, तो वे परमेश्वर की ही निंदा करते हैं।

**आयत 5.** जिन मसीहियों को पतरस ने संबोधित किया है उन्हें अपने अविश्वासी पड़ोसियों के अन्यायपूर्ण आरोप पर अधिक ध्यान नहीं करना है। प्रतिकार करना उनका विशेषाधिकार नहीं है। "पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा" (रोमियों 12:19)। प्रभु यीशु मसीह को उन्हें हिसाब देना होगा। धार्मिकता से वह हर एक व्यक्ति का न्याय चुकाएगा और उन्हें उचित दण्ड देगा। जो परमेश्वर का विरोध करते हैं और उसके लोगों की झूठी निंदा करते हैं वे स्वयं उसके जिम्मेदार होंगे।

पूरे नए नियम में नरम न पड़ने वाली एक विषयवस्तु है : परमेश्वर के न्याय के साथ ही आधुनिक युग का अंत होगा। कुछ सीमा तक, परमेश्वर का न्याय आरंभ हो चुका है। जो पाप में जीवन बिताते हैं वे इस जीवन में ही पाप का परिणाम भुगतते हैं। अभी भी, इस संसार में न्याय सदैव प्रबल नहीं होता है; लेकिन प्रभु के दिन में यह प्रबल होगा। पतरस के अनुसार जो न्याय आने वाला है वह "मनुष्य की उत्तरदायित्व पर जोर देता है और इस बात की निश्चितता कि एक दिन अंततः न्याय हर बुरे कार्यों, जो आज और यहाँ इस जीवन का भाग है, पर प्रबल होगा।"[3]

जो निंदा करते हैं वे निश्चय ही इसका "लेखा" देंगे। वे कब लेखा देंगे यह अलग विषयवस्तु है। पतरस ने प्रभु के आगमन की शीघ्र अपेक्षा की। प्रभु न्यायी होकर इस धरती पर पुनः आने के लिए तैयार है (देखें 4:7)। प्रेरित ने इस बात की भविष्यवाणी नहीं कि यह कब होगा, जैसे कि कुछ समकालीन प्रचारक इसके बारे में प्रचार करते हैं। इससे भी बढ़कर यह अधिक महत्व था कि मसीही लोग प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए जीवन जीएं इसके बजाय कि वे उसके आगमन की समय रेखा का छानबीन करे। प्रभु उस घड़ी आएगा जब इस धरती पर जीवन अपनी चरम सीमा पर होगी। यह नूह के दिनों की जल प्रलय पूर्व समय के समान होगा जब लोग खाते-पीते और शादी ब्याह करते होंगे (लूका 17:27)। परमेश्वर **मरे हुओं और जीवितों** का न्याय करेगा। जो उसके आगमन से पहले मर जाएंगे वे उसके आगमन पर जीवित किए जाएंगे और वे आत्मिक देह धारण करेंगे (1 कुरिंथियों 15:44)। उसके आगमन पर जो जीवित बचे रहेंगे वे बदल जाएंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:17) और आत्मिक देह धारण करेंगे। जो अन्यायपूर्ण तरीके से परमेश्वर के लोगों को सताते हैं और उनके नामों की निंदा करते हैं वे परमेश्वर को "लेखा देंगे।"

**आयत 6.** यह एक कठिन आयत है परिणामस्वरूप इस आयत का विभिन्न व्याख्या पाया जाता है। निम्न टिप्पणियाँ उन सब व्याख्याओं पर विराम लगा देती है। बल्कि, उन में दो सबसे अधिक संभावित टिप्पणियों पर ध्यान केंद्रित करती है। इस आयत की व्याख्या करने की कठिनाई सर्वप्रथम इसके संदर्भ से होता है। प्रेरित ने अवलोकन किया कि मसीह "शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उन का न्याय करेगा" (4:5)। आगे, यह स्पष्ट है कि पतरस और उसके पाठकों ने मसीह के शीघ्र लौटने की भी अपेक्षा की थी (4:7)।

पतरस के पाठकों ने जो प्रश्न उठाए थे, संभवतः वही प्रश्न थिस्सलुनीकियों की कलीसिया में भी उठी हुई होगी (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)। उन में से कुछ लोगों का देहांत हो गया था और अभी तक प्रभु वापस नहीं लौटा था। जो प्रभु के द्वितीय आगमन से पहले मृत्यु पा चुके थे तो क्या प्रभु के आगमन पर उनको भी उसी उद्धार और आनंद में सहभागी होने का अवसर प्राप्त होगा? चूँकि जो लोग मर चुके हैं उनके न्याय की विचारधारा ने प्रश्न खड़ा किया, तो पतरस ने अपने पाठकों को पुनः आश्वासन दिलाया कि प्रभु उन मरे हुए लोगों से उनके अभक्तिपूर्ण जीवन का लेखा लेगा, तो वह उन मरे हुए लोगों को बचाएगा

जिन्होंने विश्वासयोग्यता से जीवन व्यतीत किया है। उसने यह लिखकर उनको पुनः आश्वासन दिलाया, **क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार इसी लिये** (इसका यह तात्पर्य है कि यीशु दुष्टों का न्याय चुकाएगा जबकि उसी समय उद्धार पाए हुओं को वह छुड़ाएगा) **सुनाया गया कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उनका न्याय हो, पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें।**

ऐसा नहीं लगता है कि प्रेरित के मन में किसी व्यक्ति विशेष को प्रचार करने का विचार रहा हो। NASB में εὐηγγελίσθη *(यूवेंगलिसथे)* क्रिया का अनुवाद अवैयक्तिक रूप में किया गया है, जिसका अनुवाद इस प्रकार है "सुसमाचार प्रचार किया गया है," लेकिन कुछ लोग इस अनुवाद से संतुष्ट नहीं हैं। वे संदर्भ को महत्वपूर्ण समझते हैं और यह तर्क करते हैं कि पतरस के मन में जो प्रचार है वह यीशु का प्रचार था। 4:5 में, यीशु ही है जो न्याय करने जा रहा है। अतः 4:6 में (तर्क आगे बढ़ता है) यह यीशु है जिसने सुसमाचार का प्रचार किया है। वे इस आयत का क्रिया रूप स्वीकार करते हैं, "क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार इसी लिये यीशु के द्वारा सुनाया गया।" विवाद यह है कि 3:19 में पतरस का अभिकथन 4:6 को विस्तृत करता है। वहाँ पतरस ने कहा, "उसी में उसने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया।" ये दोनों अनुच्छेद इस दृष्टिकोण के समर्थन में लिया जाता है कि यीशु क्रूस पर अपने मृत्यु पश्चात् और पुनरुत्थान पूर्व स्वयं मृतकों के संसार में गया था।

3:19 की टिप्पणियां यह इंगित करती है, कि बाइबल में अन्यत्र पाई जाने वाली तथा-कथित अवरोहण (*Descensus*) की शिक्षा स्पष्ट रूप से पहली स्थापित शिक्षा का विरोध नहीं करती है। फिर भी, इस बात पर प्रश्न उठाया जा सकता है कि 4:6 यह अनुमान लगाती है कि यीशु ने अपने देह धारण से पूर्व रह रहे विश्वासयोग्य लोगों को किसी प्रकार का सुसमाचार सुनाने के उद्देश्य से मृत्यु लोक का भ्रमण किया। ध्यान देने वाली बात यह कि 3:19 में "प्रचार किया" के लिए κηρύσσω *(केरुस्सो)* शब्द का प्रयोग किया गया है, जबकि 4:6 में इसके लिए εὐαγγελίζω *(यूवांगेलिद्जो)* शब्द प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ "सुसमाचार सुनाया" है। यह अचिंतनीय नहीं है कि यीशु ने मृत्यु लोक में जाकर विजय की घोषणा की होगी, परंतु यह अचिंतनीय है कि प्रभु ने उस लोक में जाकर पापियों को उद्धार पाने के लिए दूसरा अवसर प्रदान किया होगा। सामान्यता, सुसमाचार सुनाने का तात्पर्य उद्धार के लिए न्यौता देने से है। पतरस ने अन्यत्र अपने पत्री में यह स्पष्ट किया है कि इस संसार में उद्धार और जीवन किसी के व्यक्तिगत विश्वास का प्रतिफल है (1:9, 17)।

KJV, NASB और NIV अनुवाद में काल में किए गए परिवर्तन हमें इस आयत को समझने में सहायता करता है। भूतकाल में "मरे हुओं को भी सुसमाचार इसी लिये सुनाया गया।" दूसरे शब्दों में, अब वे मर चुके हैं, लेकिन जब वे जीवित थे तो तब उनको सुसमाचार प्रचार किया गया। नए नियम में ऐसी कोई शिक्षा नहीं है जो यह समर्थन करे कि जिन्होंने मसीह को इस संसार में अपना पीठ दिखाया है तो मृत्युपरांत उनको उद्धार पाने का अवसर प्रदान किया

जाएगा। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने स्पष्ट किया, "मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है" (इब्रानियों 9:27)। यदि हम NRSV द्वारा अनुवाद किए गए सर्वाधिक शाब्दिक अनुवाद, "इस कारण मरे हुओं को भी सुसमाचार सुनाया गया है" ("For this is the reason the gospel was proclaimed even to the dead"), को ही लें, तो इसका आशय यही निकलता है कि उनको प्रचार किया गया है जो अब मर चुके हैं, न कि उनको जो सुसमाचार प्रचार के समय मर चुके थे। पतरस ने अपने पाठकों के प्रश्न कि यीशु ने अपने क्रूसीकरण और पुनरुत्थान के बीच का समय कहाँ बिताया, का उत्तर देने के लिए यह पत्री नहीं लिखी। वह उन्हें पुनः आश्वासन देने के लिए लिखता है कि जब प्रभु प्रकट किया जाएगा तो **आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें**।

पतरस के पाठक इस कारण आशीषित हैं कि उन्होंने क्रूस के संदेश को सुना है। पतरस ने "सुसमाचार" शब्द का प्रयोग मसीह की मृत्यु, दफनाया जाना और पुनरुत्थान के सीमित संदर्भ में नहीं बल्कि उसने इस संदेश के विस्तृत संदर्भ में कि मसीह उद्धार देता है, प्रयोग किया है। सुसमाचार वह संदेश है जिसे परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस संसार में भेजकर, अपने लिए लोगों की एक झुण्ड को उद्धार देकर अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति की है। सुसमाचार प्रचार जो यीशु के बारे में उल्लेख करता है वही सुसमाचार है। यह अनुवाद "क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार इसी लिये सुनाया गया ..." अधिक स्पष्ट होगा यदि यह ". . . उसका प्रचार उनको भी किया गया जो अब मर चुके हैं" पढ़ा जाये। प्रेरित ने जिन "मरे हुओं" का जिक्र किया है वे वास्तव में जीवित थे जब उनको यीशु के बारे में प्रचार किया गया था, लेकिन प्रभु का न्यायी होकर वापस लौटने से पहले ही वे मर चुके थे। ऐसे स्थिति में पतरस के पाठकों को पुनः आश्वासन की आवश्यकता थी। पतरस के मन में जो "मर गए थे" वे मसीही हैं जो अब मर चुके हैं। 4:6 विश्वासियों को पुनः आश्वासन देता है।

सर्वप्रथम, पतरस 4:6 का संबंध 3:19 से निम्नलिखित वक्तव्यों में से संबंधित हो सकता है: (1) यदि 3:19 का अर्थ इस संदर्भ में लिया जाये कि यीशु ने नूह के द्वारा मरे हुओं को प्रचार किया तो यह आयत इस उपमा को और अधिक विस्तृत करता है। ऐसी परिस्थिति में हमें पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं और अभिषिक्त लोगों के शिक्षा और प्रचार को इस आशय में लेना होगा कि जैसे मसीह ने उनके द्वारा लोगों को "सुसमाचार" प्रचार किया। इस आयत में जिनको यीशु ने "प्रचार किया" (3:19) वे ये हैं जो अब "मर चुके हैं।" हम यह मानते हैं कि पतरस अपने पाठकों को यही समझाना चाहता था। (2) यदि 3:19 का अर्थ इस संदर्भ में लिया जाये कि यीशु अपने क्रूसीकरण और पुनरुत्थान के बीच मृत्युलोक में गया था, तो 4:6 का अर्थ यह होगा कि यीशु ने क्रूस पर अपने विजय की घोषणा उन लोगों को की जिन्होंने भूतकाल में विश्वासयोग्यता के साथ जीवन बिताया था। जो लोग भूतकाल में मर गए हैं उनका उद्धार केवल मसीह में विश्वास करने के द्वारा ही हो सकता है। इसलिए उसने अपनी विजय की घोषणा उनसे की ताकि वे विश्वास करें और उद्धार पाएं। यहाँ इस बात की

शिक्षा नहीं पाई जाती है कि सभी मरे हुओं ने सुसमाचार सुना और इसके द्वारा उनका उद्धार हुआ या फिर आज्ञा न मानने वाले को दूसरा अवसर प्रदान किया जाएगा। बल्कि इसका आशय यह है कि जो विश्वासी मसीह के मृत्यु से पहले जीवित थे वे इस मसीह के इस घोषणा को सुन सकेंगे, विश्वास कर सकेंगे और उद्धार पा सकेंगे। यही प्रचार उन लोगों के लिए जीवन लाएगा जिन्होंने धरती पर अपने जीवन को विश्वासयोग्यता के साथ जीया परंतु जो अविश्वासी और आज्ञा न मानने वाले रहे हैं उनके लिए मृत्यु लाएगी।

जो मर गए हैं उनके लिए पतरस ने कहा कि उनको यीशु का प्रचार किया गया है कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उनका न्याय हो, "पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें।" "शरीर में मनुष्यों के अनुसार न्याय" का क्या तात्पर्य है? NASB इस वाक्यांश को "मनुष्यों के अनुसार" (κατά ἀνθρώπους, *काटा आंथ्रोपुस)* के संदर्भ में अनुवाद करता है जिसका अर्थ "मनुष्यों के रीति रिवाज के अनुसार" या "मनुष्यों के तरीके से" है। पतरस ने मसीहियों को पुनः आश्वासन दिलाया कि यद्यपि वे सभी मानव जाति के समान मृत्यु का सामना करते हैं लेकिन मृत्यु उनके लिए अंत नहीं है। मसीही और गैर मसीही एक समान, पाप के परिणामस्वरूप मरते हैं। विश्वासियों के लिए पुनः आश्वासन यह है कि यद्यपि वे भी सभी मनुष्यों के समान मृत्यु का सामना करेंगे, लेकिन मसीह उनको उसके प्रकट होने के दिन उन्हें छुड़ाएगा। यद्यपि NRSV अधिक शाब्दिक है लेकिन यह इस आशय को अच्छी तरह से प्रस्तुत करता है : "यद्यपि शरीर में उनका सबके समान न्याय किया गया है, पर वे आत्मा में परमेश्वर के समान जीवित रहेंगे।" मसीहियों का "शरीर में मनुष्यों के समान न्याय किया गया है" का अर्थ यह है कि सभी मनुष्यों के समान वे भी मरेंगे। पाप, विश्वासियों के दैहिक जीवन में वही दावा प्रस्तुत करता है जैसे कि वह अविश्वासियों के दैहिक जीवन में करता है। फिर भी विश्वासियों के लिए यह कहानी का अंत नहीं है। क्योंकि मसीह न्यायी है, परमेश्वर के वचन के अनुसार "वे आत्मा में जीवित रहेंगे।"

## अंत निकट है (4:7-11)

**[7]सब बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है; इसलिये संयमी होकर प्रार्थना के लिये सचेत रहो। [8]सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो, क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है। [9]बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का अतिथि-सत्कार करो। [10]जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए। [11]यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले मानो परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो। महिमा और साम्राज्य युगानुयुग उसी का है। आमीन।**

पतरस ने अपने पाठकों से आग्रह किया कि वे उन पापों से फिर जाएं जो उन्होंने भूतकाल में किए थे। उसने उन्हें यह भी स्मरण दिलाया है कि जो उनको सताते हैं वे, जो जीवित और मरे हुओं का न्याय करता है, को इसका लेखा देंगे। इससे भी बढ़कर, उसने उन्हें पुनः आश्वासन दिलाया कि यद्यपि वे मृत्यु के आधीन हैं, तौभी यीशु उन्हें आत्मा में जिलाएगा। अब उसके लिए यह अवसर था कि वह उन्हें मिशन की आवश्यकता समझाए। मसीह के प्रकट होने का समय निकट था, लेकिन उसी समय उन्हें परमेश्वर की राज्य के योग्य जीवन यापन करना था। इस जीवन को सेवा, एक दूसरे के प्रति प्रेम और परमेश्वर की महिमा के द्वारा सुशोभित करना था।

**आयत 7.** यह मानना कि प्रभु बादलों में दोबारा प्रकट होगा व अनिश्चित भविष्य और यह कि उसका आगमन निकट है, में विचारणीय अंतर है। आरंभिक मसीहियों के लिए प्रभु का आगमन द्वार पर ही था (1 कुरिंथियों 7:29; फिलिप्पियों 4:5; याकूब 5:8)। **सब बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है।** इस आयत को आत्मिक रूप देने का प्रयास, इसके साथ अन्याय कर सकता है। यह एक विश्वासी के मरने की निकटता का संदर्भ नहीं है। यह कहना कि "सब बातों का अंत निकट है" और कि "एक व्यक्ति किसी भी क्षण मर सकता है" दो अलग-अलग वक्तव्य है। जब लोग इस बात पर विश्वास करते हैं कि "सब बातों का अंत निकट है" तो लोग उस समय अलग-अलग तरीके से जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं।

पतरस और उसके पाठकों ने परमेश्वर की तुरही के फूँके जाने का प्रतीक्षा किया (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)। उन्होंने जब प्रभु रात में आने वाले चोर की भांति आएगा (1 थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 पतरस 3:10) की घड़ी "निकट" है, जैसे समय पर विश्वास किया। कुछ समकालीन मसीही लोग इस विचार धारा से असहज हैं क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है जैसे पतरस से कुछ गलतियाँ हो गई हो। दो हजार वर्ष बीत चुका है, और वह अभी तक प्रभु नहीं आया है। इस प्रकार का विचार धारा इस अनुच्छेद की मूल बात को छोड़ देती है। हर सदी के मसीहियों को उसके आने की आशा में जीना चाहिए। जॉन मर्रे ने इसे बहुत ही अच्छी तरह से प्रस्तुत किया है जब उसने कहा, "अंत का विषय सदैव तात्कालिक और अस्थाई के प्रति हमारे दृष्टिकोण का निर्धारण करे।"[4] जो "उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें हों" (तीतुस 2:13) को पवित्र जीवन जीने के लिए उत्साहित किया गया है। उसका आगमन निकट है, की प्रतीति किए बिना विश्वासी, उसके प्रतीक्षा में कैसे जीवन बिता सकता है? "वह कहता है, 'हाँ, मैं शीघ्र आने वाला हूँ।' आमीन। हे प्रभु यीशु आ" (प्रकाशितवाक्य 22:20)।

यीशु ने अपने शिष्यों से मत्ती 24; 25 के "जैतून पर्वत का उपदेश" में अपने पुनरागमन के बारे में बातें की। उसके पुनरागमन के निश्चित समय का व्यर्थ आकलन की चेतावनी देकर (मत्ती 24:26), उसने कई दृष्टांत दिए। उनमें से एक उस दास के बारे में है जिसका स्वामी अकस्मात लौट आता है। दृष्टांत में स्वामी

के लौटने की समानता को मसीह के स्वयं लौटने की समानता दर्शा कर, प्रभु ने चेतावनी दी कि इस संसार की गतिविधि किसी के अपेक्षा से कहीं जल्दी समाप्त हो जाएगी (मत्ती 24:45-51)। दूसरी तरफ वह अपने आने में विलंब भी कर सकता है।

अगला दृष्टांत पाँच बुद्धिमान और पाँच मूर्ख कुँवारियों का है। दुल्हे के आने की घड़ी को मसीह के आने की समानता में देखा जा सकता है। पूर्ववर्ती दृष्टांत की भांति, यह दृष्टांत भी यही सिखाता है कि प्रभु किसी की अपेक्षा से कहीं अधिक विलंब से आ सकता है (मत्ती 25:1-13)। पूर्ववर्ती दृष्टांत के भांति यीशु ने दूसरे दृष्टांत का सारांश यूँ किया : "इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को" (मत्ती 25:13)। परमेश्वर के न्याय में सन्निकटता और विलंब के तनाव को पूरे बाइबल में बड़ी सावधानी से संवारा गया है। प्रभु का दिन निकट है (यशायाह 56:1; सपन्याह 1:12; योएल 3:14), परंतु न्याय परमेश्वर के चुनाव के अनुसार अनिश्चित भविष्य की ओर धकेल दिया गया है। यीशु के दिशा निर्देश का अनुकरण करते हुए पतरस ने "सब बातों का अंत होने वाला है" पर किसी प्रकार का आकलन प्रस्तुत नहीं किया है कि अंत कब होगा। उसने केवल इतना कहा कि मसीहियों को उसके आगमन की प्रतीक्षा करते हुए जीना चाहिए। कलीसिया की शिक्षा यह नहीं है कि प्रभु आएगा; बल्कि यह कि प्रभु शीघ्र लौटेगा। मसीही लोग अंत के दिनों में रहते हैं। किसी भी क्षण वे यीशु को देखने की अपेक्षा कर सकते हैं। अगर यही मामला है तो उन्हें भलाई और तरस भरा पवित्र जीवन जीने की आवश्यकता है।

ध्यान देने वाली बात यह है कि जब पतरस ने अंत के दिनों के बारे में लिखा तो उसने यीशु का इस धरती पर हजार वर्ष के शासन के बारे में कुछ नहीं कहा है। महा क्लेश, मसीह विरोधी या आरमा गिदोन के बारे में भी उसने वर्णन नहीं किया है। प्रभु के प्रकट होने का वह समय होगा जब वह "जीतों और मरे हुओं का न्याय करने को तैयार है" (4:5)। यह सभी बातों के "अंत का समय होगा," जिसका अर्थ यह है कि भौतिक कायनात या मानव जीवन, जैसा हम जानते हैं, का अंत होगा। मानव जाति को छुड़ाने की परमेश्वर की योजना की पूर्ति हो चुकी होगी कि मसीह मानव इतिहास में फिर से प्रगट होगा। अब उसका महिमा में द्वितीय आगमन शेष है। उसके प्रगट होने पर सभी घुटना टिकेंगे और हर जीभ अंगीकार करेगी (फिलिप्पियों 2:10)।

अंतिम बातों (प्रभु का पुनरागमन, न्याय, और उसके बाद आने वाली अनंतता) के अध्ययन के लिए प्रयुक्त तकनीकी शब्द "एस्खेटोलोजी" (अंतिम दिनों के सिद्धांत) है। नए नियम में अंतिम समय का अध्ययन कि भविष्य कैसा होगा, का केवल एक मजेदार परिकल्पना नहीं है। इस प्रकार की परिकल्पना हमारे समय के योग्य नहीं है। बल्कि, प्रभु के पुनरागमन और उसके आगमन के साथ होने वाली न्याय ही भक्तिपूर्ण जीवन की गम्भीरता समझाती है। क्योंकि प्रभु का आगमन "निकट है," **तो मसीही लोग प्रार्थना के उद्देश्य से उचित न्याय और सौम्य आत्मा चाहेंगे**। नए नियम में एस्खेटोलोजी हमेशा नैतिकता की मांग करती

रही है। यह भक्तिपूर्ण जीवन जीने की मांग है।

"उचित न्याय" (σωφρονέω, *सोफ्रोनेओ)* और "सौम्य आत्मा [का होना]" (νήφω, *नेफो*) दो यूनानी आदेशात्मक शब्द का अनुवाद है जिनके अर्थ मिलते जुलते हैं। अंत के दिनों के बारे में चिंतन करने का परिणाम यह है कि मसीही लोग संवेदी, स्पष्ट विचारों वाले व संयमी हो जाते हैं। प्रेरित ने 1 पतरस 1:13 में लिखा, "इस कारण अपनी-अपनी बुद्धि की कमर बाँधकर, और सचेत रहकर, उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलने वाला है।" यहाँ भी पतरस ने "सचेत रहो" क्रिया प्रयोग किया है। क्योंकि "सभी बातों का अंत निकट है," यह वह समय है जब पापों को अपने से अलग करना है, यह वह समय है जब धार्मिकता हमारे जीवन में राज करे। जैसे कि प्रेरित ने अन्यत्र लिखा, "जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलने वाली नहीं हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए!" (2 पतरस 3:11)।

सौम्यता/संयमी का आग्रह ही प्रार्थना की प्रस्तावना है - यह "प्रार्थना का उद्देश्य है।" पतरस के शब्द हमारे लिए स्मरण पत्र[5] है कि परमेश्वर के साथ हमारा संबंध एक गम्भीर विषय है। परमेश्वर को अवसर के अनुसार, जब सामने खतरा होता है, स्मरण करते हैं तो यह धार्मिक होने का ढोंग करने जैसा है। पतरस के शब्द हमें यह स्मरण दिलाते हैं कि परमेश्वर को आराधना, स्तुति, और प्रार्थना में ढूँढने के लिए कम से कम उसका ध्यान और भय मानने की आवश्यकता है। बाइबल प्रार्थना के उद्देश्य और कार्य का सुनियोजित तरीका नहीं प्रस्तुत करती है। बल्कि, यह हमें जिन लोगों ने प्रार्थना की और क्या प्रार्थना की, के बारे में बताती है। यह हमें प्रार्थना सुनने वाले और अपने लोगों के निवेदनों का प्रत्युत्तर देने वाले परमेश्वर के बारे में बताता है। "उनके पुकारने से पहले ही मैं उनको उत्तर दूँगा, और उनके माँगते ही मैं उनकी सुन लूँगा" (यशायाह 65:24)।

परमेश्वर के सम्मुख आना एक गम्भीर विषय है, यह परमेश्वर का भय मानने का समय है, अपने भीतरी मनुष्यत्व में झांककर देखने का समय है। कुछ समूह है जो स्वयं को परमेश्वर की महिमा होने का दावा करते हैं लेकिन जहाँ वे परमेश्वर के सम्मुख "गम्भीर होने" जैसी कोई बात नहीं मानी जाती है। इक्कीसवीं सदी में, अमेरिकन एंटरटैनमेंट इंडस्ट्री, असेम्बली आफ गॉड चर्च पर हावी हुआ। बहुत से लोगों के मन में यह बात आई कि रॉक कन्सर्ट के तरह आराधना करना बड़ा रोचक व मजेदार होगा। आराधना एक आनंदमय क्षण होता है, लेकिन यह आनंद हंसी मजाक करने जैसा नहीं है। पतरस ने जो सौम्यता और उचित न्याय के बारे में परमेश्वर के लोगों को कहा है उससे रॉक बैण्ड, इलेक्ट्रीक गिटार, एक ताल में ताली बजाना इत्यादि के साथ समझौता करना कठिन है लेकिन कभी-कभी कुछ कलीसिया इसी भाव में बह जाती हैं। जब पतरस ने कहा कि, "इसलिये संयमी होकर प्रार्थना के लिये सचेत रहो" तो यह परमेश्वर के लोगों के लिए आराधना जो पश्चाताप, ध्यान, संस्मरण और धन्यवाद देने को स्पर्श करता है, अधिक उपयोगी सिद्ध होता है।

**आयत 8.** कुछ दृढ़ मनोवृति हैं जो कभी-कभी विशेष अवसर पर ठीक होती

हैं। यह सर्वदा मसीही जीवन को चित्रित नहीं करती है परंतु यह मसीही जीवन का एक अंग है। कभी-कभी जब विश्वासियों पर अकारण हमला होता है तो वे समर्थन जुटाने के लिए एकत्रित हो जाते हैं। यह ऐसे समाज के लिए जो एक साथ रहते हैं, जो एक दूसरे से प्रेम करते हैं उनको पतरस आयत 8 में संबोधित करता है।

अविश्वासी यह देखकर अचंभा करते हैं कि मसीह के शिष्य उनका भारी लुचपन में साथ नहीं देते हैं (4:4)। यह अच्छा है कि जब विश्वासी कभी-कभी अपने आपको यह स्मरण दिलाते हैं कि "वे उसको जो जीतों और मरे हुओं का न्याय करने को तैयार है, लेखा देंगे" (4:5)। अंत में न्याय की जीत होगी। एक तरफ, मसीही लोग अपने शत्रुओं को दया और आदर दिखाना चाहते हैं तो वहीं दूसरी तरफ, विश्वासी लोग निश्चय मसीह प्रभु के साथ एक दिन विजयी होंगे। जब मसीह प्रगट होगा तो वह उनको स्थापित करेगा। प्रभु दुष्टों को अपने सम्मुख से हटा देगा। जो लोग एक मसीही के विश्वास को नहीं मानते हैं तो उनके और मसीही के स्थिति में बहुत अधिक अस्पष्टता पायी जाती है। एक मसीही को उस प्रकार के जीवन शैली से अपने आपको अलग रखना है जो उसके विश्वास से मेल न खाती हो, परंतु उसको चाहिए कि वे उन्हें बताएं कि वे भी परमेश्वर के सृष्टि हैं।

अविश्वासियों की स्थिति अस्पष्ट है, परंतु उनके साथ ऐसा नहीं है जिनके साथ मसीही लोग अपना विश्वास साझा करते हैं। पतरस ने विश्वासियों से आग्रह किया कि वे एक दूसरे से अधिक प्रेम रखें। जे. एन. डी. केली ने इस आदेश सूचक वाक्यांश का अनुवाद इस प्रकार किया, "सबसे बढ़कर, एक दूसरे से पूरे बल के साथ प्रेम रखो" ("Above everything, keep your love for one another at full strength")।[6] मसीहियों का एक दूसरे के प्रति जो प्रेम है वह मसीह के प्रेम के कारण बढ़ता जाता है। 1:8 में प्रेरित ने कहा, "उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते हो।" दोषरहित सिद्धांत पतरस के पाठकों की आवश्यकता नहीं था।[7] वे मसीह को जानते थे और यह भी जानते थे कि उसने उनके लिए क्या किया है (2:21-25)। वे जानते थे कि प्रभु लौटेगा और वे यह भी जानते थे उस दिन के आने तक उन्हें किस प्रकार का जीवन जीना है। यदि ये सभी बातें सत्य होती तो मसीह का राज्य उनके मध्य सिद्ध होता। एक सीमा तक उन्होंने एक दूसरे के प्रति अचूक प्रेम दिखाया, वे मसीह के आशीषों में सहभागी हुए। जब विश्वासियों ने मसीह की देह में एक दूसरे के प्रति अमिट प्रेम का अभ्यास किया तो उन्हें स्वर्ग का पूर्वाभास हुआ। यह तो यीशु है जिसने स्वयं कहा, "यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:35)।

इसमें पतरस ने यह भी जोड़ा, **प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है**। इस वक्तव्य का अर्थ पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। पतरस के इस वक्तव्य का संभवतः यह अर्थ हो सकता है कि मानवजाति के प्रति परमेश्वर के प्रेम ने उसे मसीह को छुटकारा देने वाले के रूप में भेजने के लिए विवश किया होगा। न्याय के दिन, मसीह के प्रतिनिधि प्रायश्चित के द्वारा, परमेश्वर सारे पापों को ढांप लेगा।[8] दूसरी

संभावना यह है कि पतरस स्वयं 4:1 में वर्णित पाप के संदर्भ का अनुकरण कर रहा है। एक मसीही ने बहुत पाप कमाया था; जिसे उसने अब पीठ दिखा दिया है। 4:8 में, पतरस का तात्पर्य यह भी हो सकता था कि मसीह में अपने भाइयों एवं बहनों के प्रति प्रेम ही एक मसीही को पाप को पीछे छोड़ने के लिए बल प्रदान करता है। प्रेम पापों को ढांप देता है का अभिप्राय यह है कि यह किसी के जीवन से पापों को पूरी तरह से हटा देता है। प्रेम के कारण कोई भी जीवन के पापमय पथ को पीठ दिखा सकता है।[9] जब कि ये दोनों व्याख्या में बड़ा दम है, फिर भी इससे भी उत्तम एक और व्याख्या है। यह व्याख्या जब प्रेरित ने विश्वासियों को मसीह के समुदाय में एक दूसरे के प्रति प्रेम दिखाने के लिए उत्साहित किया तो उसी के तुरंत बाद पाया जाता है। यह उचित होगा यदि हम इस वाक्यांश, "प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है" को विश्वासियों के मध्य आपसी प्रेम के लिए व्याख्यात्मक रूप में देखें। यह संभावना है कि पतरस के पाठकों को, समकालीन मसीहियों के भांति, जब उन्होंने एक दूसरे के चाल-चलन देखा होगा तो उन्हें भी उदारवादी न्याय की आवश्यकता पड़ी होगी।

एक मसीही का दूसरे मसीहियों के साथ संगति किए बिना मसीही होने का कोई अर्थ नहीं है। मसीह की सेवा करना सहज रूप से एक सामुदायिक अनुभव है। संभवतः एक दूसरे के प्रति अविश्वसनीय प्रेम दिखाने की हमारी इच्छा की तुलना में हमारे भीतर मसीह का कोई भी परीक्षण नहीं है। जब भी लोग एक दूसरे के साथ नजदीकी संबंध में रहते हैं, तो वे एक दूसरे के वे गुण व अवगुण ढूँढ लेते हैं जो उन्हें लगातार परेशान करता रहता है। विश्वासी लोगों को जब उन्हें अपने संगी विश्वासियों के परेशान करने वाली अवगुणों का पता चलता है तो वे उनके साथ कैसे बर्ताव करेंगे? इसके लिए पतरस का यह उत्तर है, "प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है।" सचमुच, यदि कलीसिया को शांति, एकता, और सद्भाव के साथ जीना है, तो मसीही लोगों का एक दूसरे के प्रति प्रेम "अनेक पापों को ढांपता है।"

ऐसे बहुत कम अवसर होंगे जब मसीही लोग एक साथ हों और कोई किसी के प्रति अपराध न करे। घटिया, असंवेदनशील व्यवहार का कोई बहाना नहीं है; फिर भी कुछ लोग हैं जो बहुत जल्दी दोष लगाते हैं। यीशु की कलीसिया ऐसे लोगों के लिए नहीं है जो अपने गंदे भावनाओं को लिए फिरते हैं। हरेक मसीही, समय के अनुसार, या तो दोष लगाने वाला या फिर दोषी होगा। शब्दों को दीवार न बनाने की अनुमति देते हुए, मसीही लोग एक दूसरे को बिना सोच समझ के बोलने की अनुमति देते हैं। "जल्द प्रतिक्रिया करने वाले" मसीही उपद्रवी होते हैं। जो दूसरों की आवश्यकताओं का बतंगड़ बनाते हैं वे दूसरों के पापों को अनदेखा करने के योग्य नहीं है। मसीह के समुदाय के अंदर प्रेम "अनेक पापों को ढांप देता है" क्योंकि मसीहियों का एक प्रभु है, जो उनके प्रति उसका प्रेम अनेक पापों को ढांपता है। दूसरों के अंदर की कमजोरियाँ परिपक्व मसीहियों का एक दूसरे के प्रति प्रेम को कम नहीं करता है। जैसा उन्होंने स्वयं प्रभु से अनुभव किया है वैसे ही वे वही क्षमादान और दया दूसरों के कमजोरियों के प्रति दिखाएंगे।

प्रभु का उसके लोगों को निर्देश कि "प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है" वक्तव्य का दुरुपयोग हो सकता है। जब पौलुस को पता चला कि कुरिंथुस की कलीसिया स्पष्ट रूप से निंदा किए बिना, एक व्यभिचारी व्यक्ति को जगह दे रही है तो उसने उन्हें यह नहीं कहा कि कोई दूसरा तरीका अपनाओ क्योंकि "प्रेम अनेक पापों को ढांपता है" (1 कुरिंथियों 5)। कभी-कभी प्रेम किसी भाई या बहिन जो पाप में जीवन व्यतीत कर रहा/रही है का सामना करता है। प्रेम को कभी-कभी डांट फटकार की भी आवश्यकता होती है। एक बुद्धिमान भाई या बहिन डांट को गले से लगायेगा। पतरस के वक्तव्य को कभी भी पाप के लिए अनुज्ञा पत्र के रूप में नहीं लेना चाहिए।

**आयत 9.** प्राचीन भूमध्यसागरीय क्षेत्र में, अतिथि सत्कार बहुत अच्छा गुण माना जाता था। नए नियम में इसका उदाहरण बार-बार देखने को मिलता है। धन्य लोगों के बारे में यीशु ने कहा, "मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया" (मत्ती 25:35)। प्रभु ने शमौन नामक फरीसी को उसके सामान्य अतिथि सत्कार के लिए झिड़का (लूका 7:44-47)। उसने एक व्यक्ति के बारे में बताया जो आधी रात को सहायता मांगने आया (लूका 11:5-8)। पौलुस ने रोम के विश्वासियों को अतिथि सत्कार का अभ्यास करने के लिए चेतावनी दी (रोमियों 12:13)। इब्रानियों के पत्री के लेखक ने लिखा, "अतिथि-सत्कार करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कुछ लोगों ने अनजाने में स्वर्गदूतों का आदर-सत्कार किया है" (इब्रानियों 13:2)। यूहन्ना का तीसरा पत्री अतिथि सत्कार के बारे में ही है। इस सबके साथ पतरस ने कहा, "एक दूसरे का अतिथि-सत्कार करो।" "एक दूसरे" से प्रेरित का तात्पर्य दूसरे विश्वासियों के लिए था, परंतु अतिथि सत्कार सबके साथ होना चाहिए।

संभवतः प्रेरित के मन में साधारण मसीही सत्कार की भावना रही होगी जिसे एक दूसरे के साथ घरों में दिखाना चाहिए था। यह भी संभावना है कि वह अपने पाठकों के मध्य सामाजिक पारस्परिक क्रिया को बढ़ावा देना चाहता था। किंतु, ऐसे भी अवसर थे जब अतिथि सत्कार को सामाजिक मामले से बढ़कर अभ्यास किया जाना चाहिए था। उन दिनों भ्रमणकारी शिक्षक और भविष्यवक्ता थे जो कलीसिया में शिक्षा देकर विश्वासियों को उत्साहित करते थे। उनमें से एक दिमेत्रियुस थे (3 यूहन्ना 12)। पौलुस और उसके सहकर्मी उनमें से कुछ लोग थे। जिन कलीसियाओं में उन्होंने सेवा की वहाँ से उनको सहायता व प्रोत्साहन की आवश्यकता थी। उन दिनों झूठे भविष्यवक्ता (1 यूहन्ना 4:1) और झूठे शिक्षक भी थे (2 पतरस 2:1)। उनकी अतिथि सत्कार का अर्थ उनके बुरे कार्यों में सहभागी होना था (2 यूहन्ना 11)।

दरिद्र लोगों को, जिनको पतरस ने संबोधित किया है, अतिथि सत्कार की अधिक मांग थी, न कि धनाढ्य पश्चिमी संस्कृति को। जिस प्रकार दरिद्र विधवा को दो दमड़ी देने में भी अति कठिनाई हो रही थी (मरकुस 12:41-44) तो उसके तुलना में धनाढ्य लोग बहुमूल्य उपहारों को मंदिर में डाल रहे थे, परंतु पतरस के पाठकों के लिए, जिनके पास पर्याप्त संसाधन नहीं है उनके तुलना में अतिथि

सत्कार दिखाना अत्यंत कठिन था। किंतु, कुड़कुड़ाकर देने से तो न देना ही उत्तम है। पतरस ने अपने पाठकों को बिना कुड़कुड़ाए देने के लिए कहा। जब मसीही लोग एक दूसरे को देते हैं तो वे परमेश्वर को देते हैं। जब हम कुड़कुड़ाकर देते हैं तो परमेश्वर उसको पसंद नहीं करता है। खुले मन से देने के लिए धनाढ्यों के लिए अतिरिक्त अनुग्रह आरक्षित नहीं किया गया है। दरिद्र भी उदारता और स्वतंत्रतापूर्वक दे सकते हैं (2 कुरिंथियों 8:1, 2)।

**आयत 10.** पौलुस के समान (रोमियों 12:6-8; 1 कुरिंथियों 12:7-11; इफिसियों 4:11), पतरस ने भी विश्वासियों को परमेश्वर की ओर से प्राप्त विभिन्न दान और वरदानों को स्मरण दिलाने के लिए अवसर निकाला। प्रेरित ने किसी भी विशेष वरदान जिसे किसी व्यक्ति विशेष को मिला है उसे उसने पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया उसका χάρισμα *(खारिस्मा)* कहा है। पौलुस ने इस शब्द का प्रयोग 1 कुरिंथियों 12:4, 9 में किया है। मसीहियों को बीमारों को चंगा करने का वरदान, विभिन्न प्रकार के आश्चर्यकर्म करने का सामर्थ्य, व अन्य भाषा बोलने की सामर्थ्य, जो सामान्य तरीके से नहीं सीखा जा सकता है, दिया गया है। पौलुस के समान, पतरस ने भी पवित्र आत्मा का जिक्र नहीं किया है। रोमियों 12:6 में पौलुस ने पवित्र आत्मा का जिक्र किए बिना इस शब्द का प्रयोग किया है। रोमियों 12:6-8 में वर्णित वरदानों में कुछ अलौकिक वरदान, जैसे भविष्यवाणी का वरदान है, जबकि अन्य स्वाभाविक वरदान, जैसे सेवा करने और शिक्षा देने का वरदान। हमारे अनुच्छेद में, किसी को मिले वरदानों में यह स्वाभाविक वरदान जैसे बोलने या सेवा करने का वरदान है। जैसे हरेक को जो वरदान मिला है, उसके लिए प्रेरित ने सुझाव दिया है कि जिन दो वरदानों का उसने वर्णन किया है वह उसके पाठकों की क्षमता का प्रतिनिधि वरदान है।

पतरस या पौलुस ने पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए स्वाभाविक वरदानों और अलौकिक वरदानों के बीच आसानी से विभेद किया है। लेकिन निश्चय ही जो कोई इन वरदानों को प्रयोग करता है तो उसे इसके बीच विभेद करने की कोई आवश्यकता नहीं है। किसी को कोई भी वरदान प्रयोग करने का सामर्थ्य क्यों न मिला हो, वे परमेश्वर की ओर से मिले हैं और वह उसी की महिमा के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए। पतरस ने कहा, उन वरदानों को परमेश्वर की महिमा में प्रयोग करने का तात्पर्य उनको एक दूसरे की सेवा में लगाना है। "जिसको जो वरदान मिला है" उसको वैसे ही उसे उपयोग करना है। जिस प्रकार यीशु ने शिक्षा दिया है, वैसे ही जिसे वह मुफ्त में है तो उसे मुफ्त में ही देना है (मत्ती 10:8)।

चूँकि मसीहियों को स्वाभाविक सामर्थ्य परमेश्वर ने दिया है, तो पतरस ने कहा कि उनको भले भण्डारी के समान उनका प्रयोग करना है। लूका 16:1-9 में यीशु ने एक धनवान का दृष्टांत दिया जिसका एक भण्डारी था जिसको उसने बहुत ढेर सारी जिम्मेदारी सौंपी थी। लूका में यूनानी शब्द οἰκονόμος *(ओइकोनोमोस)* का "भण्डारी" ("manager") अनुवाद किया गया है जिसे 1 पतरस में "भण्डारी" ("steward") अनुवाद किया गया है। "भण्डारी"

("steward") (आमतौर पर अँग्रेजी में इस शब्द का प्रयोग दास के लिए किया जाता है) वह व्यक्ति है जो किसी धनी व्यक्ति की सम्पत्ति का देखभाल करता है। "भण्डारी" ("steward") सम्पत्ति व अन्य चीजों को सम्भालता है, लेकिन यह शब्द उसके उत्तरदायित्व को भी दर्शाता है। पतरस चाहता था कि उसके पाठक अच्छे "भण्डारी" ("steward") बनें। वह चाहता था कि वे उन चीजों को अच्छी तरह संभालें जो उनके हवाले की गई है। परमेश्वर ने मसीहियों को स्वाभाविक वरदानों, जो उनका धरोहर है, से सुशोभित किया है। जो कुछ परमेश्वर ने उनको दिया है उसके प्रति वे परमेश्वर के उत्तरदायी हैं। प्रेरित ने अपने पाठकों को चेताया कि वे अपने वरदानों को समझदारी के साथ प्रयोग करें।

यह बड़ी ही रुचिकर बात है कि पतरस ने मसीहियों के सामूहिक स्वाभाविक वरदानों को **परमेश्वर के नाना प्रकार** के अनुग्रह कहा है। "अनुग्रह" एक ऐसा विस्तृत शब्द है जिसके द्वारा परमेश्वर अपने अच्छे वरदानों को लोगों को देता है। पौलुस के लिए अनुग्रह एक ऐसा शब्द है जिसके द्वारा उद्धार की पुष्टि होती है (इफिसियों 2:8)। पतरस ने कहा कि यीशु मसीह का प्रकाशन ही परमेश्वर के अनुग्रह की अंतिम अनुभूति है (1:13)। जब तक प्रभु दोबारा नहीं लौटता है, परमेश्वर का अनुग्रह जो वह अपने लोगों को विस्तृत आशीष के रूप में देता है, में अनुभूत होती रहेगी। जब कोई परमेश्वर का वचन बोलता है या अपने पड़ोसी की सेवा करता है, तो वह परमेश्वर के अनुग्रहित आशीषों का जिम्मेदारी पूर्वक अनुभव व प्रयोग कर रहा है। जबकि पतरस ने यहाँ कलीसिया को देह की उपमा नहीं दी है, जिसमें देह का हरेक सदस्य दूसरे सदस्य के वरदानों का आनंद उठाता है, लेकिन इस तथ्य का यहाँ अनुमान लगाया जा सकता है। वरदान कई प्रकार के हैं। किसी भी मसीही को दूसरे के वरदानों के प्रति ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए, न ही अपने वरदानों को तुच्छ समझना चाहिए।

**आयत 11.** जब पतरस ने लिखा, **यदि कोई बोले**, तो इसका तात्पर्य यह है कि परमेश्वर के परिवार में बोलने की विशेष सेवा भी थी। अधिकांश लोग बोलने में सक्षम हैं, लेकिन हर कोई कलीसिया की सेवा एक अच्छे वक्ता के रूप में नहीं कर सकता है (देखें याकूब 3:1)। पिछली आयत में, प्रेरित ने स्पष्ट किया कि सब मसीहियों को अलग-अलग वरदान मिले हैं। जब किसी को बोलने की स्वाभाविक वरदान प्राप्त है, तो इसका वह प्रयोग करे। संभवतः पतरस के मन में बोलने का आशय, परमेश्वर के वचन का सार्वजनिक घोषणा करने से था। संभवतः उसके मन में परमेश्वर के वचन की घोषणा कलीसिया में सबके सामने करने की थी। प्रेरित चाहता था कि जो बोलना चाहते हैं वे **परमेश्वर का वचन बोलें**।

"बोलने" (λόγια, *लोगिया)* का सामान्य अर्थ परमेश्वर की ओर से बोलना है। प्रेरित 7:38 और रोमियों 3:2 में इस शब्द का प्रयोग पुराने नियम से लिया गया है। एक वक्ता जिन शब्दों का उच्चारण कलीसिया के सम्मुख करता है वह अधिकार और सामर्थ्य में बाइबल के वचन के समान नहीं होता है। फिर भी, जो वचन मसीही शिक्षकों और प्रचारकों के द्वारा बोला जाता है वे परमेश्वर के वचन के प्रकाशन से ही बोला जाता हैं, इसलिए वे ईश्वरीय प्रकाशन के ही भागी होते

हैं। पतरस मसीही वक्ताओं से आग्रह कर रहा था कि वे इस सेवा की जिम्मेदारी की गम्भीरता समझें। वह चाहता था कि जब वे बोले तो शब्दों का चयन ध्यान से करे जिससे प्रेरितों के संदेश से कलीसिया की उन्नति हो।

पतरस के तुलना में पौलुस ने मसीह की देह की उन्नति के लिए दिए गए विभिन्न आत्मिक वरदानों की विस्तृत सूची जारी की है। पतरस ने केवल दो मुख्य वरदान, बोलने और सेवा करने की वरदानों के बारे में ही लिखा है। हालांकि, इन दोनों वरदानों के अंतर्गत ये वरदान कई और विशेष तरीके से प्रकट हो सकते हैं। बोलने के अंतर्गत सार्वजनिक व निजी शिक्षा देना, प्रचार करना, उत्साहित करना, प्रार्थना करना, और शायद गीत गाना भी शामिल हो सकता है। सेवा करने का क्षेत्र बोलने से अधिक विस्तृत हो सकता है। प्रेरित ने लिखा, **यदि कोई सेवा करे; तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है।** पौलुस ने सेवा को वह स्थान दिया जिसमें दान देना और दया दिखाना शामिल है (रोमियों 12:8), परंतु सेवा में इतनी विषमता शामिल है कि कोई भी इसे मसीह का अनुकरण करने के द्वारा ही कर सकता है। जब यीशु ने मत्ती 25:31-46 में न्याय का विहंगम दृश्य दिखाया, तो उसमें उसने उनका उल्लेख किया है जिन्होंने भूखों को खाना खिलाया, बीमारों की सुधि ली, वस्त्रहीनों को वस्त्र पहनाया। सेवा ऐसा जरूरी कार्य है मानो जैसे कोई दैनिक रूप से फर्श में झाड़ू लगा रहा हो या ऐसा अभूतपूर्व कार्य जैसे कोई शहीद हो रहा हो।

कोई भी कुछ क्यों न करे, चाहे वह बोले या सेवा करे, वह अपनी सेवा का स्रोत परमेश्वर के अनुग्रहित दान में पाता है। उसका बोलना परमेश्वर के संदेश के अनुरूप हो; उसका सेवा "उस शक्ति से हो जो परमेश्वर उसे देता है।" परमेश्वर न केवल अपने लोगों को आदेश देता है बल्कि वह उनको अपने सामर्थ्य से भी भरता है। परमेश्वर सामर्थ्य देता है। पौलुस ने एक अन्य स्थान में लिखा, "हर एक बात और सब दशाओं में मैंने तृप्त होना, भूखा रहना, और बढ़ना-घटना सीखा है। जो मुझे सामर्थ्य देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूँ" (फिलिप्पियों 4:12b, 13)। जिन वरदानों का आनंद एक विश्वासी उठाता है वह उसके स्व महिमा मण्डल के लिए नहीं है। जब कोई "परमेश्वर की बातें बोलता है" और जब वह "उस शक्ति से जो परमेश्वर उसे देता है" से सेवा करता है तो इसका परिणाम ऐसा होगा कि **सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की ही महिमा होगी।** कोई भी स्तुति, महिमा, जो पुत्र के द्वारा नहीं किया गया है उसे परमेश्वर को नहीं दिया जाना चाहिए। यीशु ने कहा, "बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता है" (यूहन्ना 14:6; देखें प्रेरित 4:12)।

पतरस ने अपनी पत्री में इसे आशीर्वाद वचन के साथ समाप्त किया। इस प्रकार का आशीर्वाद वचन पत्री के मध्य में पाया जाना असामान्य है, लेकिन अप्रत्याशित नहीं है। आशीर्वाद वचन संक्षिप्त, व औपचारिक रूप से परमेश्वर को दिए गए स्तुति है। अक्सर वे आश्चर्य चकित करने वाली अर्ध स्वैच्छिक ऊर्जा से परमेश्वर की स्तुति करते हुए दिखाई देते हैं। जबकि ये पर्याप्त विभिन्नता पनपाने की अनुमति देते हैं लेकिन वे परमेश्वर की महिमा, सामर्थ्य और उसके गुणों को

साझा करते हैं। भजन में यह सामान्य है लेकिन पूरे बाइबल में भी ये पाए जाते हैं। आशीर्वाद वचन किसी भी पत्री के समापन में लिखे जाने के लिए उपयुक्त समझे जाते हैं, जहाँ लेखक हस्ताक्षर करके उस पत्री को समाप्त करता है (रोमियों 16:27; फिलिप्पियों 4:20; 1 तीमुथियुस 6:15, 16; 1 पतरस 5:11; 2 पतरस 3:18; यहूदा 24, 25)। फिर भी, कभी-कभी स्तुति, लेखक के मन में पत्री के समाप्त होने से पहले ही उमड़ने लगती है (रोमियों 11:36; इफिसियों 3:21)। पतरस का आशीर्वाद वचन पत्री के मध्य में होना अपेक्षित नहीं है, लेकिन अप्रत्याशित नहीं है। लेकिन, इस स्थान पर आशीर्वाद वचन का होना, ने 1 पतरस की पत्री में एक और विवाद को खड़ा किया है।

जिस प्रकार हमने *परिचय* में अध्ययन किया था कि कुछ विद्वानों का मत है कि प्रेरित ने 1 पतरस को पत्री के बजाय कुछ और लेख के रूप में प्रस्तुत किया था। कुछ लोगों का मानना है कि इससे पहले कि यह एक पत्री के रूप में अवतरित हुआ, यह उन लोगों के लिए जो बपतिस्मा लेना चाहते थे या फिर जिन्होंने बपतिस्मा ले लिया था, उनके लिए एक बपतिस्मा संबंधी नियमावली लिखी गई थी। इसका तर्क यह है कि द्वितीय सदी की कलीसिया ने बपतिस्मा नियमावली को पत्र के रूप में स्वीकार किया था। उन्होंने इस पर पतरस का नाम इसलिए लिखा ताकि यह बड़े पैमाने पर पढ़ा जाए। जो इस तर्क का समर्थन करते हैं उनका मानना है कि 1 पतरस 4:12-5:14 वास्तविक पत्र है जिसे बाद में बपतिस्मा नियमावली से जोड़ दिया गया था। यदि यही बात थी, तो जिस दस्तावेज को हम 1 पतरस कहते हैं वह दो अलग-अलग दस्तावेजों के रूप में लिखा गया था, पहला बपतिस्मा लेने वालों के लिए बपतिस्मा नियमावली जो पत्री के रूप में परिवर्तित हुआ (1:3-4:11), और दूसरा यह एक मूल पत्र था (4:12-5:14)। इस प्रकार का तर्क इस तथ्य को खण्डित करती है कि इस पत्री का कोई भी भाग प्रेरित पतरस के द्वारा नहीं लिखा गया था।

इस शिक्षा को त्यागने के कई कारण हो सकते हैं (देखिए, *परिचय*, पृष्ठ 3-4)। फिर भी इस पत्री में इसका आशीर्वाद वचन इस स्थान पर पाया जाना पत्री की एकता संबंधी तथ्यों पर प्रश्न चिह्न लगाता है। इसके साथ ही, पतरस ने 4:12 में मसीही सताव के प्रश्न को नवीनीकृत अत्यावश्यक के रूप में प्रस्तुत किया है। पत्र की इस विशेषता का विश्लेषण करने के लिए दो दस्तावेजों की कल्पना करना व्यर्थ है। संभवतः इस उत्साह भरे पत्र को लिखने के मध्य पतरस आशीर्वाद वचन लिखने के लिए थोड़ा रुक गया होगा। संभवतः उसने इस पत्री को लिखने लिए कुछ घंटों या कुछ दिनों का अवकाश लिया होगा और उसके पश्चात वह फिर पत्री को लिखने के लिए लौटा होगा और फिर उसने अपने पाठकों के सताव की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया होगा। ये प्रक्रिया कल्पना के परे नहीं है।

हम स्वीकार करते हैं कि 4:11 और 4:12 के बीच 1 पतरस में अचानक आए परिवर्तन से यह कहा जा सकता है कि यह पत्री दो अलग-अलग दस्तावेजों के रूप में अस्तित्व में आई होगी। यहाँ प्रेरित ने पत्री समाप्त करने के उद्देश्य से

आशीर्वाद वचन लिखा होगा। उसने संभवतः पत्र लिखकर उसे एक तरफ रखा होगा और पत्र वाहक की प्रतीक्षा कर रहा होगा। कुछ दिन या कुछ सप्ताह बीत गया होगा। उसी समय, इससे पहले कि वह इस पत्री को भेजे, पतरस को अपने संघर्ष करते पाठकों की कुछ और आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त हो गई होगी। इसके अलावा, रोम में निराधार मसीहियों की परिस्थिति बिगड़ गई होगी। एन्ड्रू एफ. वाल्स के अनुसार नीरो की मसीहियों के प्रति घृणा, या फिर पौलुस के मारे जाने के समाचार से पतरस के मन में यह विचार आया होगा कि उसके पाठकों का सताव बहुत बढ़ जाएगा। इसके पश्चात् यदि प्रेरित ने 4:12-5:14 को मसीहियों की नई सूचना या प्रगति के प्रत्युत्तर में जोड़ा होगा तो यह उसके बाद की आयतों की अत्यावश्यकता को स्पष्ट करता।[10]

## अनुप्रयोग

### पाप के साथ समझौता करने का खतरा (4:3)

पतरस ने जोर देकर कहा कि पाप के साथ समझौता नहीं किया जा सकता है: "और घृणित मूर्तिपूजा में जहां तक हम ने पहिले समय गंवाया, वही बहुत" (4:3)। वचन उन मसीहियों को घोर चेतावनी देता है जो यह मानते हैं कि वे बिना प्रभावित हुए पाप में गोता लगा सकते हैं। सुलैमान ने लिखा, "और न उसे लड़ाई से छुट्टी मिल सकती है, और न दुष्ट लोग अपनी दुष्टता के कारण बच सकते हैं" (सभोपदेशक 8:8b; NIV)।

लगभग एक सौ साल पहले (1886) रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन ने एक भले मनुष्य के बारे में लिखा। डा. जेकिल एक चिकित्सक थे जिन्होंने अपना जीवन अपने मरीजों की सेवा में बलिदान कर दिया था। मित्र और परिवार के लोग उन्हें अति संवेदनशील व्यक्ति के रूप में जानते थे जो दूसरों का अधिक ध्यान रखा करते थे। वह एक सभ्य व्यक्ति थे और धर्म के प्रति उनका अधिक लगाव था। उन्होंने अपने धन को स्वेच्छा से दूसरों के साथ बांटा। उनके बारे में लोग जो नहीं जानते थे वह यह है कि डा. जेकिल के भीतर छिपी हुई इच्छा को दबाने में उन्होंने बहुत संघर्ष किया। उन्हें लगा कि उनका झुकाव क्रूर व हिंसक प्रवृति की ओर है, जिनको वह नहीं चाहते थे उनके प्रति झूठ बोलना, अपने मित्रों का अपने फायदे के लिए प्रयोग करना, जिस चीज को वह चाहते थे उसे किसी भी मूल्य पर प्राप्त करना जैसी प्रवृति उनके अंदर उभरने लगी थी। डा. जेकिल को अपने अंदर के छिपे मनुष्यत्व से घृणा होने लगी थी।

चिकित्सक को लगा कि उनके अंदर छिपे इस दुष्ट अजनबी का सामना करना है तो उसे सबके सामने लाना होगा ताकि इस अभिव्यक्ति को स्वीकार किया जाये। उन्होंने एक दवा की खोज की। जब उन्होंने उसे खाया तो डा. जेकिल, श्री हाईड - एक गंदा, घृणित व्यक्ति बन गए, जो क्रूर व अमानवीय थे, जिन्होंने अब चोरी और हत्या को अपना पेशा बना लिया था। पहले-पहले तो डा. जेकिल को अपने पर नियंत्रण था। जब भी वह चाहते थे वह श्री हाईड बन जाते थे और जब

उनकी इच्छा होती थी कि फिर से वह अपने पुराने स्थिति में आए तो डा. जेकिल बन जाते थे। अब ऐसा समय आया कि जब उन्हें श्री हाईड को पीछे छोड़ना अत्यंत कठिन हो गया था। श्री हाईड बलशाली होते गए। अंत में, जब वह दोबारा डा. जेकिल बनने में असफल रहे और पुलिस उन्हें पकड़ने पर ही थी तो श्री हाईड ने आत्म हत्या कर ली।

**दृष्टिकोण का मामला (4:7-11)**

निम्न वर्णित कहानी छोटे शहरों के अखबारों की सुर्खियाँ बन जाती हैं। यह एक वास्तविक घटना है। स्थानीय प्राथमिक विद्यालय की एक शिक्षिका विद्यालय से घर लौट रही थी। यह एक आम दिन था। उन्होंने अपनी पाँच वर्ष की बालिका को कार की पिछली सीट में बैठाया था। संभवतः वह नहीं जानती थी कि उसे किसी चीज से चोट लगी थी। पास से गुजरती हुई एक तीव्र रफ्तार गाड़ी ने रुकने के चिह्न का अनदेखा करते हुए उसकी कार को टक्कर मारी। घटना स्थल पर ही उसकी मृत्यु हो गई। छोटी लड़की को नाजुक हालात में अस्पताल ले जाया गया।

गाड़ी रुकने के स्थान पर जिस कार ने इस शिक्षिका की कार को टक्कर मारी थी उसका चालक अठारह वर्ष का युवा था। कार में कुल मिलाकर चार जवान थे। पुलिस ने उस कार से ढेरों मादक द्रव्यों की खेप प्राप्त की। जब हम ऐसे समाचार पढ़ते हैं तो हम दुःखी, क्रोधित, असमंजस, असहाय अनुभव करते हैं। किसी को कीमत चुकानी पड़ती है। और हम यह जानते हैं। हम चाहते हैं जिन्होंने ऐसी स्थिति पैदा की है कि एक निर्दोष महिला को मार डाला, उसकी छोटी बेटी को माँ रहित किया, को दण्ड मिलना चाहिए। हम ऐसी आशा करते हैं कि उनको उचित दण्ड मिले। उनको सलाखों के पीछे लंबी अवधि के लिए रहना चाहिए।

इस घटना के कुछ घंटों के बाद शहर के दूसरे छोर में एक और घटना घटित हुई। इसने अखबारों में सुर्खियाँ नहीं बटोरी। एक माता और पिता ने अपने दरवाजे पर किसी की दस्तक सुनी। यह पुलिस थी। उन्हें पता चला कि उनके बेटे या बेटी ने सड़क पर गाड़ी रुकने के चिह्न का उल्लंघन किया है। जिसका एक भयानक परिणाम हुआ। उसके कार में शराब थी। एक जवान माँ की मृत्यु हो गई है।

दृष्टिकोण के आधार पर ये दोनों घटनाएं अलग-अलग दिखती है। जरा कल्पना कीजिए कि इन तीनों ने इस घटना को कैसे देखा होगा (1) एक पति, अपनी पत्नी और छोटी बच्ची का घर आने की प्रतीक्षा कर रहा हो, (2) माता-पिता जिन्होंने अपने अठारह साल के बेटे को कार की चाभी पकड़ा दी हो, और (3) मैं स्वयं, एक जिज्ञासु अजनबी जो समाचारों को पढ़ रहा हो, जो अपने अविश्वास में अपने सिर को हिला रहा हो। यह इस पर निर्भर करता है कौन इस घटना में किस तरह से शामिल है हर एक के लिए एक ही घटना अलग-अलग दिखाई पड़ती है।

पहला पतरस 4:7-11 में, प्रेरित का संदेश दृष्टिकोण पर आधारित है। वह

विश्वासियों को उस लेंस के बारे में लिख रहा है जिसको उन्हें अपने चश्मों में लगाकर पहनना था। पतरस के प्रथम पाठकों ने बहुत दुःख उठाया था। जब उन्होंने मसीह को अपने जीवन का स्वामी ग्रहण किया तो उनके पुराने मित्रों और पड़ोसियों ने उनके जीवन को नरक बना दिया था। वे उस भीड़ के संग अब नहीं थे जो एक दूसरे के देखा देखी में सब कुछ कर रहे थे। उनके मित्रों को उनकी ये बातें समझ नहीं आई। पहले तो वे उन पर क्रोधित हुए, तब उन्होंने उनके इस नए परमेश्वर जिसको पलिस्तीन के यहूदियों ने प्रचार किया था, का मजाक उड़ाया। उन्होंने मसीहियों के जीवन को दुःख भरा बना दिया था। पतरस ने उनको बताया जो सब जानते थे कि वह सत्य है : "इस से वे अचम्भा करते हैं, कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उन का साथ नहीं देते, और इसलिये वे बुरा भला कहते हैं" (1 पतरस 4:4)।

पतरस ने अपने पाठकों से आग्रह किया कि वे अपनी पीड़ा और तिरस्कार को उचित दृष्टिकोण में देखें। मसीही लोग घटनाओं को परदेशी के परिदृश्य से देखते हैं। जो चिंता और फिक्र मसीही लोग दूसरों के लिए करते हैं वह संसार की चिंता और फिक्र से भिन्न है। जो संसार से प्रेम करते हैं वे इस संसार के हैं; मसीही लोग इस संसार से गुजरकर पार जाने वाले हैं। ये लोग वह जानते हैं जिसे संसार के अन्य लोग नहीं जानते हैं।

1. *मसीही परिप्रेक्ष्य भिन्न है क्योंकि "सब बातों का अन्त निकट है"* (1 पतरस 4:7)। सन्देश चटपटा है। प्रेरित ने यह नहीं लिखा, "कभी न कभी, हम नहीं जानते कब, परन्तु कभी तो प्रभु लौट कर आएगा। यह अति शीघ्र तो नहीं है। हम इसे अपने मस्तिष्क से निकाल कर अपने कार्यों को करते रहें।" इस विश्वास में कि प्रभु शीघ्र ही आएगा और उसके आगमन के बारे में एक लापरवाह सी स्वीकृति रखने में बहुत भिन्नता है। प्रेरित और उसके पाठक इसी पूर्वानुमान में जीते थे। प्रभु का आगमन कोई उदासीन विषय नहीं था जिसकी उपेक्षा की जा सकती थी।

नए नियम के लेखकों का यह सामान्य दृष्टिकोण है कि सभी बातों का अन्त निकट है: "तुम भी धीरज धरो, और अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का शुभागमन निकट है" (याकूब 5:8); "इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को" (मत्ती 25:13)। जब मसीही यह मानते हैं कि प्रभु का पुनःआगमन उनके निकट भविष्य में होने वाला है, तो इससे उनके जीवन परिवर्तित हो जाते हैं। वे भिन्न रीति से जीते हैं। पतरस यही कह रहा था। यह मानने में कि प्रभु लौट के आएगा और इसे मानने में कि वह शीघ्र लौट के आएगा भिन्नता है। क्योंकि सब बातों का अन्त निकट है, प्रेरित ने लिखा, "इसलिये संयमी होकर प्रार्थना के लिये सचेत रहो।"

सब लोग यह नहीं मानते हैं कि प्रभु लौट के आएगा। कुछ यह मानते हैं कि जिस भौतिक संसार को वे जानते हैं, बस वही है जो है। भौतिकवादी मानता है कि सृष्टि में केवल पदार्थ और चाल ही है। जिस बात पर वे विश्वास रखते यदि उस पर सावधानी से विचार करें, तो अपने अस्तित्व के प्रति दो संभव

प्रतिक्रियाएं पाएंगे। (1) कुछ भौतिकवादी खेदित रहते हैं। उनके लिए जीवन सृष्टि का एक चुटकुला है। उसमें उन छोटी-छोटी बातों के अतिरिक्त जो कोई व्यक्ति अपने लिए बना लेता है और कोई अर्थ नहीं है। (2) अन्य रूखे होते हैं। उनका दर्शन होता है "खाएं-पीएं, क्योंकि कल तो मर ही जाएंगे" (1 कुरिन्थियों 15:32)। वे जीवन की सफलता उस आनन्द से नापते हैं जो वे मना सकते हैं। यह गाड़ियों के पीछे लिखे उस वाक्य के समान है, "जो सबसे अधिक खिलौनों के साथ मरेगा जीत उसी की है।"

पतरस के लिए जीवन गंभीर तो है किंतु खेद पूर्ण नहीं है; वह आनंदपूर्ण है किंतु निरर्थक नहीं है। क्योंकि प्रभु इस संसार का न्याय करने आ रहा है, प्रेरित ने कहा "इसलिये संयमी हो।" हमें सचेत रहना है कि हम क्या कहते और करते हैं। मानवीय चुनावों और कार्यों का महत्व है। जीवन का महत्व है। इसलिए मसीहियों को प्रार्थना करनी चाहिए।

दोनों, यहूदी और इसलाम मतों में दिन भर में प्रार्थना के समय निर्धारित हैं। इस्लामी देशों में, आप काज़ी को प्रार्थना के लिए विश्वासियों को पुकारते हुए देखेंगे। इस पुकार की आवाज़ नगरों और शहरों में स्थान-स्थान पर बने मीनारों पर लगे लाउडस्पीकरों द्वारा आती है। लोग थम कर, अपने घुटनों पर आकर प्रार्थना करते हैं। मसीहियों का आदर्श है कि सदा प्रार्थना में रहें। पौलुस ने लिखा "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो" (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। प्रभु के पुनः आगमन पर मसीही परिप्रेक्ष्य विश्वासियों को प्रार्थना करना सिखाता है। क्योंकि जीवन गंभीर है, क्योंकि सब बातों का अन्त निकट है, क्योंकि यीशु स्वर्ग में राज्य कर रहा है, इसलिए वे प्रार्थना करते हैं।

2. *क्योंकि परदेशी मसीही जानते हैं कि प्रभु शीघ्र लौट के आएगा, इसलिए उनका परिप्रेक्ष्य एक दूसरे को सप्रेम स्वीकार करने का अनुग्रह प्रदान करता है।* "सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो, क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है" (1 पतरस 4:8)। प्रेरित ने अपने पाठकों को लापरवाही के साथ अपनी समस्याओं की उपेक्षा करने को नहीं कहा। अनैतिकता त्वरित प्रत्युत्तर की माँग करती है। पतरस मसीहियों से यह नहीं कह रहा था कि वे यदि कोई भाई किसी अनुचित प्रसंग में फंसा पाएं, या कोई झूठा हो या चोर हो तो उसकी अनदेखी कर दें। मसीही एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी हैं। पतरस के शब्द पाप करने के लिए न्यौता नहीं हैं। ऐसा कोई सुझाव नहीं है कि मसीही व्यर्थ बातों या व्यवहार को हलके में लेकर अनदेखा कर दें। किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह दूसरों से आशा रखे कि वे उसके पापों को छिपा लेंगे।

पतरस जो कह रहा था वह था कि जब लोग एक दूसरे से प्रेम रखें, तो उनका परिप्रेक्ष्य उन से भिन्न हो जो स्वार्थी भावना रखते हैं। मसीह में भाई और बहन एक दूसरे को बदनाम नहीं करते हैं। वरन, वे मिलकर पापी को उसकी लज्जा से बाहर उठा लेते हैं। वे उसके विरोध में नहीं होते हैं; वे उसकी ओर होते हैं। विश्वास के इस ओर परिप्रेक्ष्य भिन्न होता है। हम में से अधिकांश पतरस द्वारा ऐसे चिताए जाने को व्यक्तिगत स्तर पर समझ सकते हैं। मुझे यह कहने में कोई

लज्जा नहीं है कि यदि मेरी पत्नी किसी अन्य के साथ किसी कलह में फंसती है, तो मैं उसका पक्ष देखना चाहूँगा। लेकिन इसका यह तात्पर्य नहीं है कि मैं असीम लचीला हूँ। मैं कभी यह भी कह सकता हूँ, "यह तुम्हारी गलती है," परन्तु इसके लिए पहले मुझे निश्चित करना होगा। यह संभव है कि जितने प्रमाण की आवश्यकता मुझे किसी अजनबी को दोषी मानने के लिए होगी, उससे कहीं अधिक प्रमाण की आवश्यकता मुझे मेरी पत्नी को दोषी मनाने के लिए चाहिए होगी।

जब पतरस ने कहा कि "प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है," तो वह उस मनोवृत्ति की बात कर रहा था जो मसीही एक दूसरे के प्रति रखते हैं। वे किसी भाई या बहन को जो करते हुए देखते हैं उसे एक सही अभिप्राय देने के लिए उत्सुक रहते हैं। जो शब्द कोई भाई या बहन बोलते हैं उनके प्रति वे नम्र रवैया रखते हैं, जबकि यदि वे ही शब्द कोई और बोले तो उन्हें ठेस पहुँचेगी। हम दृष्टिकोण की बात कर रहे हैं। जब कोई यह मान लेता है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, वह मृतकों में से जी उठा है, वह वापस आने वाला है - जब मसीह में हमारे बंधन साझा होते हैं - मैं उसे भिन्न दृष्टिकोण से देखता हूँ। मैं उसके अभिप्रायों की जाँच करने में नम्र रहूँगा। मैं उसके भले गुणों को देखने और उनकी सराहना करने में तत्पर होऊँगा। मैं अपना बटुआ खोलकर उसकी आवश्यकता के समयों में उसकी सहायता करने के लिए तत्पर होऊँगा। न तो पौलुस और न ही पतरस इस विषय से कभी थके: "इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष कर के विश्वासी भाइयों के साथ" (गलतियों 6:10); "प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; ... झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता" (1 कुरिन्थियों 13:4, 5)।

मसीहियों को एक साथ समय बिताना चाहिए, इसके कारणों में से एक है कि शरीर में जीवन का बहुत महत्व है। जब मैं किसी राज-मार्ग पर होता हूँ तो सामने वाला यदि अपनी गाड़ी बहुत धीमी, या बहुत तेज़ या बहुत कैसी भी चला रहा हो तो मैं उसपर क्रोधित हो सकता हूँ। किंतु यदि मुझे उसकी आँखों में आँखें डालकर बात करनी हो, तो मैं उससे वे नीचता बातें नहीं कहूँगा जो मैं एक सुरक्षित दूरी से उसे कह सकता हूँ। यदि मैं यह जानता हूँ कि सामने वाली गाड़ी चलाने वाला व्यक्ति वही है जो कलीसिया में मेरे साथ बैठता है, तो मेरी मनोवृत्ति और भी अधिक नम्र हो जाएगी। मेरा दृष्टिकोण बदल जाएगा। पत्र में लोग क्रूर और मुँहफट हो सकते हैं। जो वह कभी आमने-सामने होने पर नहीं कहेंगे, उसे भी कह देते हैं। परिस्थिति जितनी अधिक अव्यैक्तिक होगी, हम उतने अधिक क्रुद्ध हो सकते हैं। इसीलिए हमें एक दूसरे को व्यक्तिगत रीति से जानना है। इसीलिए सहभागिता-प्रीतिभोज, सुसमाचार सभाएं और वेकेशन बाइबल स्कूल महत्वपूर्ण होते हैं। प्रेम बहुत से पापों को ढांप देता है। यदि प्रेम असफल होता है तो बहुधा इसका कारण होता है कि हम एक दूसरे को वैसा नहीं जानते हैं जैसा जानना चाहिए। पतरस ने कहा, "बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का अतिथि-सत्कार करो" (1 पतरस 4:9)।

3. *मसीही परिप्रेक्ष्य भिन्न है क्योंकि आपसी मतभेदों के होते हुए भी मसीही एक दूसरे का आदर करना सीखते हैं।* हम सब एक समान नहीं हैं। परमेश्वर भिन्न वरदान देता है। प्रेरित के कहने का तात्पर्य था, "जो भी योग्यता परमेश्वर ने तुम्हें दी है, उसके द्वारा यथासंभव भला करो। साथ ही, इसमें आनन्दित हो कि औरों के पास भिन्न व्यक्तित्व, भिन्न रुचि, भिन्न योग्यताएं हैं।" पतरस ने लिखा:

> जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए। यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले मानो, परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है ... (1 पतरस 4:10, 11अ)।

हम सब की मनोवृत्तियाँ भिन्न होती हैं। कुछ बोलने में अन्य लोगों से अधिक तीव्र होते हैं। यह आशीष भी हो सकती है और अभिशाप भी। कुछ स्वभाव से शांत होते हैं; अन्य बातूनी। कुछ निर्णय लेने में उतावली करते हैं; अन्य धीरजवन्त तथा विश्वासयोग्य होते हैं। जब मसीहियों का वह दृष्टिकोण होता है जो अपने प्रभु को जानने से आता है, तो वे अपने सह-विश्वासियों का आकलन प्रेम की भरपूर खुराक के साथ करते हैं। व्यक्ति को भला देखते हुए, उसके जीवन में आत्मा के फलों को देखने के कारण, शिष्य एक दूसरे के साथ कृपालु होकर व्यवहार करते हैं। यह पाप को नजरंदाज करना नहीं है। यह कमियों के होते हुए भी प्रेम करना है। यह "बहुतों पर भय के साथ दया करो; वरन उस वस्त्र से भी घृणा करो जो शरीर के द्वारा कलंकित हो गया है" (यहूदा 23) को निभाना है।

नया नियम विश्वासियों को बारंबार परस्पर भिन्नताओं के लिए धन्यवादी होने के लिए और जिनके वरदान स्वयं से भिन्न हैं उनका आदर करने के लिए आग्रह करता है।

> क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है। क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया (1 कुरिन्थियों 12:12, 13)।

प्रेम हम से असंभव की माँग नहीं करता है। वह यह नहीं चाहता है कि हम सभी एक समान व्यक्तियों की संगति का ही आनन्द लें। हम कुछ के साथ अन्यों की अपेक्षा अधिक समानताएं रखते हैं। मसीहियों को इस बात के लिए दोषी नहीं मानना चाहिए कि कुछ उन्हें अन्यों की अपेक्षा अधिक प्रिय हैं, परन्तु मसीह हमें और वृहद होने के लिए कहता है। वह हमसे सभी लोगों का आदर करने, अपने भाइयों और बहनों के प्रति दयालु होने, और अप्रसन्न होने या आलोचना करने में धीमा होने को कहता है।

पतरस का निष्कर्ष यह था। उसने कहा कि हमें स्मरण रखना चाहिए कि परमेश्वर की महिमा हमारी अपनी महिमा से अधिक महत्वपूर्ण है। हम अपनी

भावनाओं को आहत होता हुआ देख सकते हैं। हम इससे उभर भी जाएंगे। जब आवश्यक हो, हम अपने आप को छोटा भाषण दे सकते हैं। हम अपने आप को स्मरण दिला सकते हैं कि हमें जो बात अच्छी नहीं लगी उसे कहना वाला व्यक्ति एक अच्छा पुरुष अथवा अच्छी महिला है। उनके जीवनों में अच्छाई है। क्योंकि उनकी कही कोई बात हमें पसंद नहीं है इसलिए हम उन्हें बुरा नहीं जता सकते हैं। मसीहियों का व्यवहार ऐसा होता है "जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो। महिमा और साम्राज्य युगानुयुग उसी का है। आमीन" (1 पतरस 4:11ब)।

उपसंहार। यीशु कलीसिया के लिए इसलिए नहीं मरा जिससे कि मैं और आप इतवार की प्रातः एक अर्थपूर्ण अनुभव पा सकें। कलीसिया मेरे और आपके बारे में नहीं है। वह परमेश्वर और उसकी महिमा के बारे में है। यदि क्रूस के कारण यीशु मेरे और आपके पापों की अनदेखी कर सकता है, तो हम भी एक दूसरे के पापों की अनदेखी कर सकते हैं। मुझे एक अन्तिम बात और कहने दीजिए। हम में से अधिकांश के जीवनों में कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें हम सुधार सकते हैं। एक दूसरे के दोषों को सह लेने से यह अर्थ नहीं है कि किसी को भी हमारे दोषों के बारे में कुछ नहीं कहना है। यदि कोई भाई हमारे पास प्रेम तथा आदर के साथ आए और हमारे मसीही जीवन की कोई ऐसी बात के बारे में बताए जिस में हम कम पाए जाते हैं, हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए। प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है का यह अर्थ नहीं है कि जब भी कोई हमारे किसी दोष को सुधारने में हमारी सहायता करना चाहे तो हम क्रोधित हो जाएं।

## वह शीघ्र आ रहा है (4:7)

मुझे उसका यह कहना कि "काश कि मैं बातों का परिप्रेक्ष्य देख पाता" स्मरण है। वह अभी भी एक जवान पिता ही था, चाहे वह तीस के पार हो चुका था। वह चिंतित था। अपनी पत्नी और बच्चों के साथ आराम करने का उसके पास कभी समय ही नहीं हो पाता था। चाहे कुछ नहीं हो रहा हो, फिर भी वह व्यस्त रहने को बाध्य लगता था। जीवन उसके कार्य के चारों ओर अधिक और परिवार के चारों ओर कम घूमता था। किसी रीति से बातें सही प्रकार से केंद्रित नहीं थीं। उसे लगता था कि किसी प्रकार से वह जीवन की अधिक महत्वपूर्ण बातों को कम महत्वपूर्ण के लिए छोड़ रहा है। समस्या यह थी कि उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह इस चक्कर से बाहर कैसे निकले। जो भी वह करता था लगता था कि वह उसे योजना के अनुसार नहीं वरन बाध्य होकर कर रहा है। उसके पक्ष में यह बात थी कि उसने अपना सही आकलन किया था। उसे बातों के संबंध में सही परिप्रेक्ष्य चाहिए था।

जब तक कोई यह नहीं पहचान लेता है कि कुछ है जो सही नहीं है, वह अपना जीवन बदलेगा नहीं। चाहे पाप में फंस गए हों या मात्र अधिक महत्वपूर्ण बातों से भटक गए हों, हमें आदतों को तोड़ने के लिए संसाधनों की आवश्यकता होती है। पतरस ने इस प्रकार अपने पाठकों के जीवन में पाप और अनैतिकता की

पकड़ को तोड़ने में सहायता की। उसने उन्हें स्मरण करवाया, "सब बातों का अन्त निकट है" (1 पतरस 4:7)। इससे उनके जीवनों में एक नया परिप्रेक्ष्य आ गया। नए नियम की कलीसिया प्रभु के आगमन की बाट जोह रही थी। कृपया इसे वह सारांश मत समझ लीजिए जिसके बारे में चर्चा कभी-कभी हम बाइबल कक्षा में सुनते हैं। वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह शीघ्र आने वाला था। जब परमेश्वर के लोग यह मान लेते हैं कि वह शीघ्र आने वाला है तो फिर जीवन पहले के समान नहीं रह जाता।

---

समाप्ति नोट्स

[1]वेन ए. ग्रूडेम, *द फर्स्ट इपिस्टल आफ पीटर: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमेंट्री*, टिंडेल न्यू टेस्टामेंट कमेंट्रीज, भाग 17 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1988), 167. [2]द्वितीय सदी के मध्य के वक्ता ऐलियस एरिस्टीडेस ने अपने समय के निंदक दर्शनशास्त्रियों की कटु आलोचना की और तब उसके बाद उस समय के नये धर्म, मसीहियत को भी उसने निशाना बनाया। उसने निंदकों के बारे में कहा, "उनका व्यवहार पलिस्तीन के ईश्वर की निंदा करने वालों के जैसा है। वे भी [अर्थात मसीही लोग] विभिन्न चिह्नों के द्वारा कि वे अपने ऊपर नियुक्त अधिकारियों को मान्यता न देकर, अपनी अपवित्रता को प्रकट करते हैं और उन्होंने अपने आपको यूनानियों और सभी भले कामों से अलग कर लिया है।" (ऐलियस एरिस्टीडेस *ओरेशन्स* 46)। एरिस्टीडेस, पतरस का निकटतम समकालीन ने मसीहियों पर आग उगला जिसके कारण प्रेरित ने यह सुझाव प्रस्तुत किएः "इससे वे अचम्भा करते हैं कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उनका साथ नहीं देते, और इसलिये वे बुरा भला कहते हैं" (1 पतरस 4:4; NIV)। [3]लियोन मॉरिस, *द बिब्लिकल डॉक्ट्रीन आफ जजमेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1960), 72. [4]जॉन मर्रे, *प्रिंसिपल्स आफ कंडक्टः आस्पेक्टस आफ बिब्लिकल इथिक्स* (लंदनः टिंडेल प्रेस, 1957), 72. [5]आयत 1:13 में उद्धृत टिप्पणी देखें। [6]जे. एन. डी. केली, *ए कमेंट्री आन दि एपिस्टल आफ पीटर एण्ड ज्यूड*, ब्लैक्स न्यू टेस्टामेंट कमेंट्रीज (लंदनः एडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1969), 176. [7]इसका उद्देश्य सही शिक्षा को हल्के में नहीं लेना है। सही शिक्षा गलातिया की कलीसिया की आवश्यकता थी। यह 2 पतरस में संबोधित किए गए विश्वासियों की भी आवश्यकता थी। [8]केली ने इसका समर्थन किया है। (केली, 178.) [9]जे. रैमसे माइकल्स ने इस अनुच्छेद को इस प्रकार समझा। (जे. रैमसे माइकल्स, *1 पीटर*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वोल्यूम 49 [वाको, टेक्सासः वर्ड बुक्स, 1988], 247.) [10]एलन एम. स्टिब्बस और एन्ड्रू एफ. वाल्स, *द फर्स्ट एपिस्टल जनरल आफ पौल*, टिंडेल न्यू टेसटामेंट कमेंट्रीज (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1959), 57.